प्राथमिक शिक्षा के मुद्दे

डी. पी. ई. पी.

जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम

भाग-II, अंक-1, जनवरी-अप्रैल, 2000

प्राथमिक शिक्षा पर एक लेख

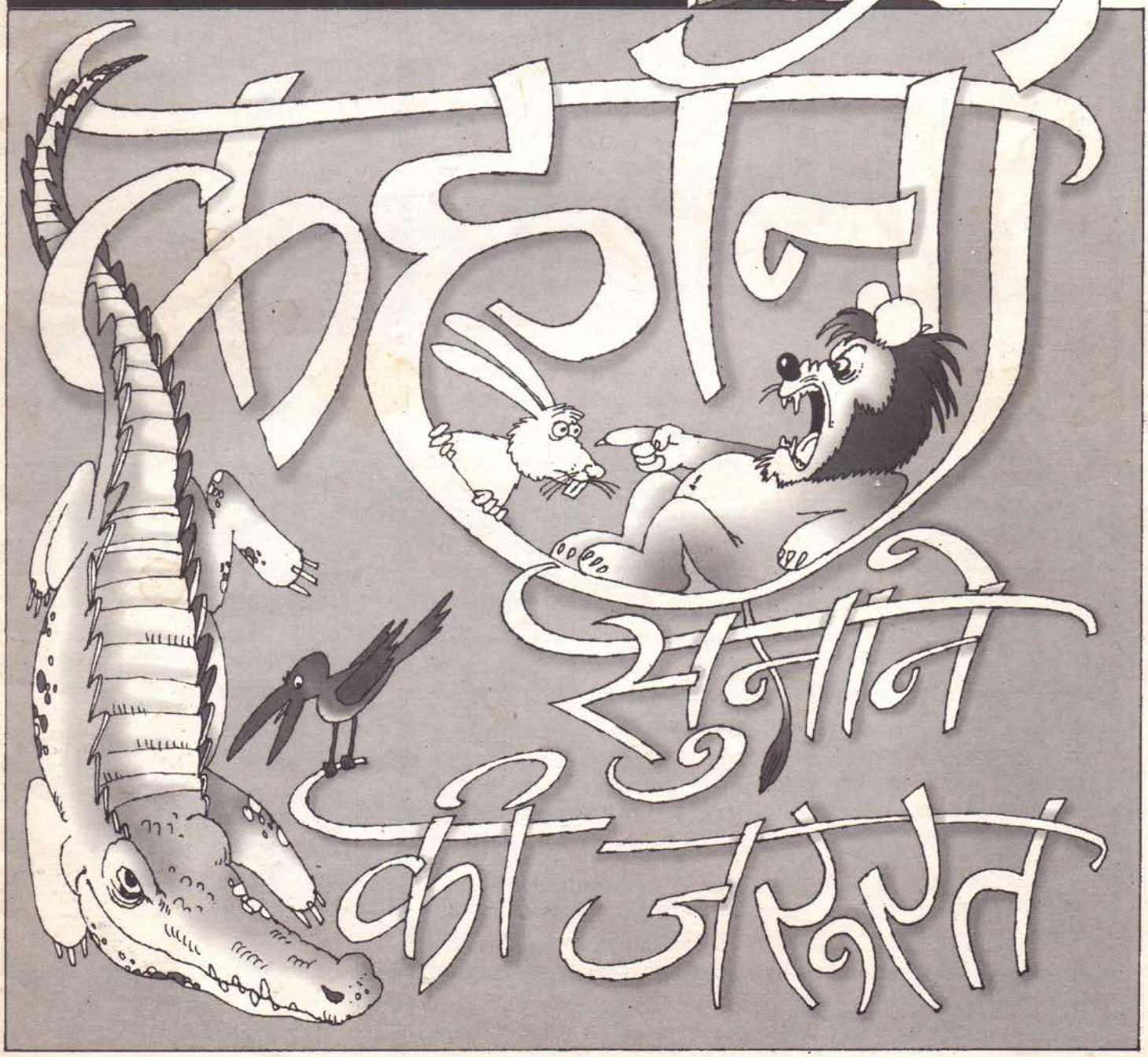

आपकी प्रतिक्रियाएँ

हमने पाठक मंच स्थापित करने का फैसला किया है। आपके द्वारा भेजी गई सूची में से हमने कुछ पुस्तकें भी छांटी हैं। इन किताबों को प्राप्त करने में कृपया हमारी सहायता करें।

ए.एस.गणेश, संदर्भ व्यक्ति
ब्लॉक संदर्भ केन्द्र, गुदीबन्दे, कोलार जिला,
कर्नाटक-561209

संवादपत्र के पहले दो लेख 'दिमाग के प्रेत' और 'कक्षा के अन्दर', कुछ ऐसे वास्तविक मुद्दों के बारे में हैं जिनका सामना अध्यापक रोजाना विद्यालय में करता है। खिलौनों का कोना बहुत मजेदार है और ऐसे प्रकरण आने वाले अंकों में भी दिए जाने चाहिए।

एम.सी. पन्डा, बी.आर.सी. समन्वयक
पारलाखेमुन्डी गजपती जिला,
उड़ीसा-761200

मैं प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक हूँ और सीखने के अलग-अलग तरीकों के बारे में जानने का बहुत इच्छुक हूँ। मैंने जुलाई माह के संवादपत्र में दी गई कुछ गतिविधियों का प्रयोग किया है। क्या मुझे यह संवादपत्र नियमित रूप से मिल सकता है?

जी.ज्योति, अध्यापक
पिछातुर मण्डल, चित्तूड़ जिला,
आन्ध्रप्रदेश

संवादपत्र भेजने के लिए धन्यवाद। हमें संलग्न किताबों की सूची विशेष रूप से उपयोगी लगी। इसमें से हमने कुछ किताबें छांटी हैं और हम चाहते हैं कि उन्हें प्राप्त करने में आप हमारी सहायता करें।

एन. वसुदेवन, प्रधान अध्यापक
चेरपल्सेरी, पालक्कड़ जिला
केरल।

संवादपत्र 'प्राथमिक शिक्षा के मुद्दे' वास्तव में बहुत मजेदार, प्रेरित और प्रोत्साहित करने वाला है। इसमें बताई गई गतिविधियाँ अच्छी शिक्षण पद्धतियों के उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। लेकिन क्या इसमें कुछ ऐसी गतिविधियाँ भी शामिल की जा सकती हैं जिनमें बच्चे स्वानुशासन, स्व-मूल्यांकन और स्व-परिवेक्षण करना सीखें। इससे यह गतिविधियाँ उन बच्चों तक भी पहुँच सकेंगी, जिन्हें 'धीरे सीखने वाले' या सीखने में असमर्थ बच्चे समझा जाता है।

सुश्री अनुप्रिया चड्डा, परामर्शद,
एडसिल टी एस जी
दिल्ली।

बिहार के छ: जिलों में प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (SPEED) को चलाने में यूनिसेफ मदद कर रहा है। हालांकि अब तक हमने समुदाय और स्कूल के संबंध को प्रगाढ़ बनने के लिए समुदाय को प्रेरित कर जुटाने पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित किया है, इस वर्ष से शिक्षा प्रक्रिया के सभी पहलुओं को सुधारने की दिशा में कुछ प्रयास किए जाएंगे। इन में से एक प्रयास जो हमने करने का फैसला किया है वह प्रोजेक्ट जिलों में 1000 अध्यापकों को प्राथमिक शिक्षा पर पढ़ने की समृद्ध सामग्री बाँटना है। हमें लगता है कि यह संवादपत्र एक ऐसी सामग्री है जिसे हमारे कार्य क्षेत्र के अध्यापकों तक पहुँचाया जाना चाहिए। इसलिए हमारा निवेदन है कि इस संवादपत्र का हिन्दी अंक सभी अध्यापकों तक पहुँचाने में आप हमारी मदद करें।

तेजेन्द्र सिंह सन्धु, प्रोजेक्ट ऑफिसर
बिहार फील्ड ऑफिस, 8, पाटलीपुत्र कॉलोनी,
पटना-800013

अनुक्रमणिका

दयालु गाड़ीवान और चालाक मगरमच्छ	4
दयालु गाड़ीवान..... के साथ कक्षा मे	7
कहानी सुनाने की जरूरत	11
कथावाचक की और से	18
अध्यापक की डायरी से	21
एक कथावाचक की खोजबीन	22
गतिविधि संग्रह	24

सम्पादक:
सुश्री विपाशा अग्निहोत्री
सुश्री रश्मि शर्मा

डिजाइन और चित्रांकन:
अतानु रॉय और देश राज

प्रकाशक:
एडसिल, तकनीकी अनुसमर्थन समूह (TSG) द्वारा जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.) के ब्यूरो, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के लिए

आगे पत्राचार के लिए इन लोगों को लिखें:-
विपाशा अग्निहोत्री
पैडागॉजिकल इम्प्रूवमेन्ट यूनिट (TSG)
एडसिल बी-86, डिफैन्स कॉलोनी
नई दिल्ली - 110024
फोन : 4693385
या
रश्मि शर्मा
प्राथमिक शिक्षा ब्यूरो,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय,
शास्त्री भवन, नई दिल्ली - 110001
फोन : 3782883

सम्पादक की मेज से

प्राथमिक शिक्षा पर गम्भीर चर्चा का अभाव खलता रहा है। दुर्भाग्य से ऐसा कोई मंच नहीं था जहाँ अध्यापक और संदर्भ व्यक्ति प्राथमिक शिक्षा के मुद्दों पर आपस में बातचीत कर सकें। इसी कमी ने हमें यह संवादपत्र निकालने के लिए प्रेरित किया। अभी तक के पाँच अंकों में यही एक कोशिश की गई है कि शिक्षाविदों, विश्वविद्यालय शिक्षकों, गैर-सरकारी संगठनों, प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों और जिला और उप-जिला स्तर पर कार्य कर रहे संदर्भ व्यक्तियों के बीच एक संवाद आरम्भ हो सके। इसके अलावा विभिन्न रिर्पोटों, किताबों और समाचार पत्रों से लिए गए उद्धरण, कक्षा-कक्ष में करने के लिए गतिविधियाँ और प्राथमिक शिक्षा पर काम करने वाले गैर सरकारी संगठनों के बारे में जानकारी भी इस संवादपत्र के अहम् भाग हैं।

अपने पाठकों से हमें बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। कुछ ने हमें लेख और गतिविधियाँ भेजी हैं और कुछ ने संवादपत्र में खास मुद्दों पर बातचीत करने का आग्रह किया है। हमारे कुछ दोस्तों ने संवादपत्र के अत्यन्त देरी से निकलने की ओर बहुत विनम्रता से हमारा ध्यान आकर्षित किया है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने दो-टूक शब्दों में इस देरी के बारे में हमें चेताया है। इस देरी के लिए हम सच्चे मन से माफी चाहते हैं। हम कोशिश करेंगे कि भविष्य में यह संवादपत्र नियमित रूप से आपके पास समय पर पहुँचे।

और अब हमारे पाठकों के लिए एक अच्छी खबर। अब से यह संवादपत्र हर तीसरे महीने छपेगा और प्रति अंक इसकी 2000 प्रतियाँ छापी जाएंगी। प्रतिवर्ष कम से कम एक अंक किसी विषयवस्तु पर आधारित होगा। यह अंक भी कहानी सुनाने और कक्षा-कक्ष में उसके उपयोग पर केन्द्रित है। संवादपत्र के इस अंक में हमने पेशेवर कहानी कहने वालों, अध्यापकों और शिक्षाविदों के कहानी सुनाने के अनुभवों को इकट्ठा किया है। आने वाले अंकों में दो और खास विषयवस्तु पर आधारित अंकों का इंतजार करें- एक गणित पर और दूसरा स्कूल के पुस्तकालय पर आधारित।

हमें इस अंक में प्रकाशित विभिन्न लेखों और गतिविधियों पर आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा। प्रतिक्रिया से ही हमें विभिन्न मुद्दों पर एक रचनात्मक संवाद बनाने में मदद मिलती है। जिन क्षेत्रों को केन्द्रित करने की हमने कोशिश की है उनमें से कुछ हैं सीखने की प्रक्रिया, गतिविधि की प्रकृति और गतिविधि संग्रह, सीखने-सिखाने की सामग्री, बच्चों के प्रति रवैया, कहानी कहना, कक्षा-कक्ष रणनीति आदि।

इस अवसर पर हम अपने सभी पाठकों को उनकी प्रेरणात्मक प्रतिक्रिया के लिए धन्यवाद देते हैं। पूरे TSG परिवार और एडसिल कार्य समूह को भी इस संवादपत्र को निकालने में मदद के लिए धन्यवाद।

Vipasha Rashmi Sharma

दयालु गाड़ीवान और चालाक मगरमच्छ

एक दिन की बात है, एक कौवा नदी के किनारे-किनारे उड़ रहा था। उड़ते-उड़ते उसने किनारे के करीब उथले पानी में एक मगरमच्छ को चुपचाप मजे से पड़े देखा। वह मगरमच्छ मोटा और सुन्दर लग रहा था और यह सोचकर कि मगरमच्छ के मरने पर उसका शरीर कितनी बढ़िया दावत देगा, कौवे के मुँह में पानी आ गया।

कौवा इधर-उधर उड़ता गया और उसने कई बार मगरमच्छ को देखा। धीरे-धीरे उसके मन में यह ख्याल और ज्यादा बैठता गया। आखिरकार उसके दिमाग में एक तरकीब आई और वह नदी के उस किनारे के करीब उत्तरा जहाँ मगरमच्छ लेटा था।

नमस्ते, दोस्त मगरमच्छ, उसने कहा-'क्या तुम जानते हो कि पास ही में इससे भी काफी ज्यादा अच्छी एक और नदी है?'

'में तो नहीं जानता', मगरमच्छ ने उत्तर दिया।

'तो फिर में ही तुम्हें वहाँ लेकर चलता हूँ', कौवे ने दोस्ताना अंदाज में कहा।

'अगर तुम ऐसा करोगे तो में तुम्हारा बहुत अहसानमन्द रहूँगा', मगरमच्छ ने उत्तर दिया।

'तो फिर आओ मेरे साथ', कौवा बोला। 'मेरे पीछे-पीछे आओं यहाँ से नदी करीब आधा मील ही दूर हैं क्या तुम इतना चल पाओगे?'

'हाँ-हाँ! क्यों नहीं?' 'यह भी कोई दूरी हैं' मगरमच्छ खुश होकर बोला।

और वे दोनों चल पड़ें

दोनों चलते गए, कौवा नाचता-कूदता और मगरमच्छ उसके पीछे धीरे-धीरे चलता हुआ। वह बहुत थक रहा था और उसे लग रहा था कि वे आधे मील से काफी ज्यादा सफर कर चुके हैं।

उसने पूछा- 'मित्र कौवे, क्या हम पहुँचने वाले हैं?' 'मुझे लगता है हम काफी दूर आ गए हैं और में अब थक रहा हूँ।'

'क्या? अभी से थक गए?' कौवे ने ऐसे पूछा जैसे उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा हों

'मेरे दोस्त, यदि तुम उस शानदार नदी तक पहुँचना चाहते हो जिसका जिक्र मैंने तुमसे किया है तो अभी तुम्हें और भी बहुत दूर चलना होगा।'

बेचारा मगरमच्छ थका-हारा घिसटता गया, परन्तु धीरे-धीरे वह कमजोर होता जा रहा था और आखिरकार पस्त होकर वहीं गिर पड़ा। वह दुष्ट कौवा उसे अपनी नदी से करीब तीन मील दूर ला चुका था।

'वहीं पड़े रहो मेरे दोस्त', धोखेबाज कौआ बोला- 'जब तुम्हारे इस मोटे-ताजे शरीर में से प्राण निकल जाएंगे तो में तुम्हें आकर खा लूंगा।' और वह उस मगरमच्छ को मरने के लिए छोड़कर उड़ गया। जाते समय भी उसके मुँह में मगरमच्छ को खाने के लालच से पानी भर आया।

मगरमच्छ वहाँ भूखा, प्यासा आँखों में आंसू भरे निढ़ाल पड़ा रहा। तभी एक आदमी बैलगाड़ी लिए वहाँ से गुजरा और मगरमच्छ को वहाँ पड़े रोते

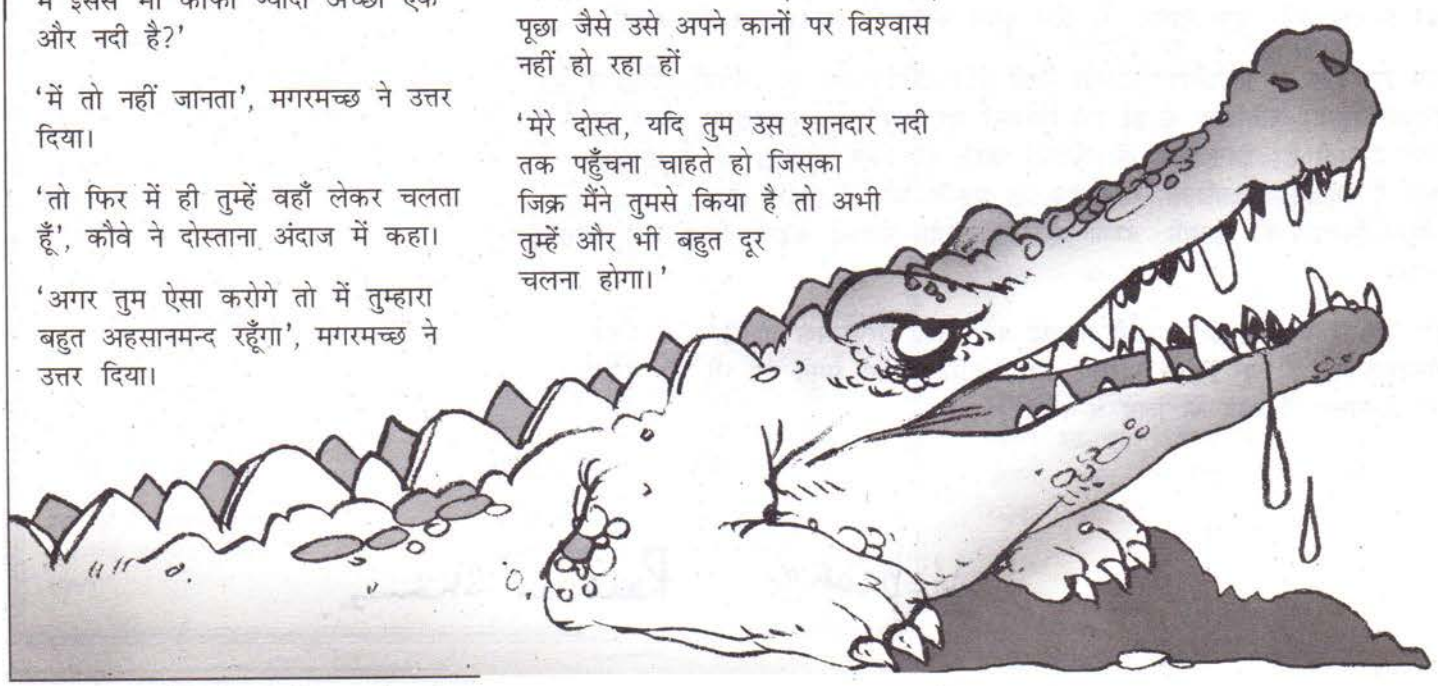

देखकर उसने अपनी गाड़ी छोड़ी और जमीन पर घुटनों के बल झुककर यह देखने लगा कि क्या वह इस अभागे जानवर की कुछ मदद कर सकता हैं।

'ओ अच्छे गाड़ीवान, मेरे स्वामी', मगरमच्छ हाँफते हुए बोला। कृप्या करके मुझे अपनी गाड़ी में बैठाकर मेरी नदी तक ले जाइयें में प्यास के मारे मर रहा हूँ और अब में एक कदम भी नहीं चल सकता।'

उस दयालु गाड़ीवान ने मगरमच्छ को उठाकर गाड़ी में रखा और उसे नदी तक वापस ले गया।

जब वे नदी किनारे पहुँचे तो गाड़ीवान मगरमच्छ को वहीं पर छोड़ने लगा, परन्तु मगरमच्छ ने उससे प्रार्थना की कि वह अपनी बैलगाड़ी को थोड़े से गहरे पानी तक ले जाए। 'मैं इतना कमजोर हो गया हूँ कि तैर नहीं सकता' उसने समझाते हुए बोला। वह बहुत भूखा भी था।

दयालु गाड़ीवान अपनी बैलगाड़ी को नदी में वहाँ तक ले गया जहाँ पर पानी उसके बैलों के पैरों के काफी ऊपर तक आ रहा था, फिर उसने मगरमच्छ को पानी में गिरा दिया। मगरमच्छ जोर के छपाके से पानी में उतरा। गाड़ीवान नदी के किनारे आने की ओर गाड़ी को पलटाने ही वाला था कि उसने देखा कि मगरमच्छ ने अपने बड़े-बड़े जबड़ों में उसके एक बैल का पैर कस कर पकड़ लिया था। ओह! कि मगरमच्छ एक चालाक और धोखेबाज जानवर होता हैं

गाड़ीवान दुःखी हुआ कि उसके उपकार का बदला इतनी कृतघन्नता से दिया गया।

'मेरे बैल का पैर छोड़', वह चिल्लाया। 'छोड़ दे, ओ, ओ निकृष्ट तुच्छ मगरमच्छ।'

परन्तु मगरमच्छ तो कस कर पकड़े ही रहा। चिल्लाने की आवाज एक खरगोश

ने सुनी और वह भागता हुआ पानी के किनारे तक यह देखने आया कि क्या गड़बड़ हैं उसने फटाफट सारी स्थिति समझ ली और गाड़ीवान को बोला- अपनी गाड़ी चलाने वाली छड़ी से इसे जोर से मारों मारो! मारो, इसे जोर से मारों' गाड़ीवान ने मगरमच्छ को पूरी ताकत से छड़ी मारी और आश्चर्यचकित मगरमच्छ ने एक पल में बैल का पैर छोड़ दिया। गाड़ीवान ने मौके का फायदा उठाया और अपनी गाड़ी पानी से निकाल कर किनारे ले गया। फिर खरगोश को धन्यवाद कर वह अपने रास्ते चल पड़ा।

मगरमच्छ यह तो भूल गया कि कैसे जिस गाड़ीवान ने उसे मौत के मुँह से वापस खींचा उसी के साथ उसने छल कपट किया। उसे खरगोश के बीच में हस्तक्षेप करने पर बहुत जोर से गुस्सा आया और उसने ठान लिया कि वह खरगोश से बदला लेकर रहेगा।

अगली सुबह जब खरगोश नदी किनारे पानी पीने आया, तो मगरमच्छ उसका इंतजार कर रहा था। वह बहुत कम गहरे पानी में था और उसके शरीर का ज्यादा भाग पानी के बाहर था व दिखाई दे रहा था, मगरमच्छ को यह बात मालूम थी और वह बिल्कुल स्थिर था जिससे कि खरगोश को ऐसा लगे कि पानी में किनारे के पास लकड़ी का कोई लट्ठा पड़ा हैं।

लेकिन खरगोश इतनी आसानी से धोखा खाने वाला नहीं था। वह पानी के किनारे तक गया और इस तरह बोला मानो सोचते-सोचते बोल रहा हों।

'अच्छा, अब देखूं यह क्या है, लकड़ी के लट्ठे नदी में पानी की दिशा में बहते हैं और मगरमच्छ पानी से विपरीत दिशा में तैरते हैं।'

मगरमच्छ ने ये शब्द सुने और ज्यादा से ज्यादा लकड़ी के लट्ठे की तरह दिखने के लिए वह पानी के बहाव की दिशा में थोड़ा सा चला और तब ही खरगोश ने मौके का फायदा उठाया, खूब सारा पानी पीया और भाग खड़ा हुआ।

अगली सुबह खरगोश फिर पानी पीने नदी किनारे आया। मगरमच्छ पहले की तरह उसका इंतजार कर रहा था और इस बार बिना यह ध्यान दिए कि खरगोश क्या कह रहा है वह बिल्कुल स्थिर खड़ा रहा।

कक्षा में आप इस तरह की कहानी से क्या-क्या कर सकते हैं, इसके लिए अग्निहोत्री का लेख देखिए।

इस बार खरगोश वास्तव में धोखे में आ गया। उसने सोचा कि वह शायद पानी के किनारे पड़ा लकड़ी का एक लट्ठा ही हैं फिर भी, वह पानी पीने के लिए झुकने से पहले पानी के बहाव की दिशा में थोड़ा सा आगे बढ़ा। इस दौरान चालाक मगरमच्छ उस पर नजर रखे हुए था और जैसे ही खरगोश ने पानी पीना शुरू किया मगरमच्छ तेज़ी से बढ़ा, अपने विशाल जबड़े खोले और खरगोश को झपट कर पकड़ लिया।

खरगोश को जंगल के सारे जानवरों में बुद्धिमान खरगोश के नाम से जाना जाता था। उसे उन सब में सबसे चतुर माना जाता था। मगरमच्छ को कितना घमण्ड हुआ खरगोश को बुद्धि में हराकर, इसका अंदाज लगाना कठिन हैं उसने अपने दांतों के बीच खरगोश ऐसे पकड़ रखा था जिससे सारी दुनिया देख सके कि उसने क्या हासिल कर लिया था। अपनी पूँछ को जोर से पटक कर खूब हलचल मचाता वह 'ही, ही, ही!' हंसता हुआ तैरने लगा।

उसके मुँह में जकड़ा खरगोश भी उसके साथ-साथ चलता हुआ 'ही, ही, ही' हंसने लगा 'अरे, तुम तो एक चतुर मगरमच्छ हो, है न?'

'ही, ही, ही!' मगरमच्छ जोर से गुर्राया।

'ही, ही, ही!' खरगोश ने उत्तर दिया।

'ही, ही, ही!' मगरमच्छ फिर हंसा।

'हा, हा, हा!' खरगोश जोर से बोला।

मगरमच्छ अपनी सफलता के घमण्ड में इतना चूर था कि वह भी चिल्लाया 'हा, हा, हा!'

जाहिर है ऐसा करने के लिए उसे अपना मुँह चौड़ा खोलना पड़ा। होशियार खरगोश ने ठीक यही सोचा था। जब मगरमच्छ अपने जबड़ों को चौड़ा खोलकर 'हा, हा, हा!' गुर्रा रहा था, खरगोश ने नदी किनारे के कम गहरे पानी में छलांग लगाई और फिर क्रोधित मगरमच्छ पर 'हा, हा, हा!' हंसता हुआ, वह खुशी-खुशी भाग गया।

मगरमच्छ कितना मूर्ख जानवर हैं पहले तो वह कौवे की बातों में आ गया और फिर उसने दयालु गाड़ीवान के प्रति इतनी अकृतज्ञता दिखाई। उसके बाद से पशु जगत में मगरमच्छ बेवकूफ और धूर्त जानवर के रूप में जाना जाने लगा, एक ऐसा जीव जिसकी कभी मदद नहीं करनी चाहिए और जिस पर कभी विश्वास नहीं करना चाहिए।

स्त्रोत: बर्मा और धाय की परियों की कहानियाँ, सोमैया, मुम्बई

'दयालु गाड़ीवान'.....

के साथ कक्षा में क्या कर सकते हैं?

रमाकान्त अग्निहोत्री

कक्षा में अपना बचपन हम लोग भूले से भी नहीं भूलते । बचपन के दोस्त व बचपन के खेल हमें रह रह याद आते हैं। बचपन का एक बहुत ही खूबसूरत व प्यारा हिस्सा होता है बचपन में सुनी कहानियाँ। दादा-दादी, नाना-नानी, माँ-बाप व घर के अन्य लोगों व दोस्तों से सुनी कहानियाँ हमारे जीवन का अविभाज्य अंग बन जाती है । जो कहानी हम अपनी नानी से सुनते है वही बड़े चाव के साथ अपने बच्चों व पोते-पोतियों को सुनाते है। और इसी प्रकार, बहुत धीरे-धीरे बदलती कहानियों का सिलसिला चलता रहता है । ये कहानियाँ हमारे वर्तमान को हमारे भूत व भविष्य के साथ जोड़ने का एक सशक्त माध्यम बन जाती है । फिर भी शिक्षाविद् व अध्यापकगण कहानी के महत्व को नहीं पहचानते । अक्सर लोग मानते है कि शिक्षा में 'कहानी सुनाने' का कोई विशेष स्थान नहीं; केवल कुछ मनोरंजन भर होता है इससे; पाठ्यक्रम में कहानी सुनना-सुनाना कोई विशेष रोल अदा नहीं कर सकता आदि। लेकिन यह मान्यता सही नहीं है।

कहानी सुनने से बच्चों को बेहद खुशी होती है। यही एक कारण काफ़ी है कहानी को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाने के लिए। लेकिन कहानी सुनने से तो और भी कई फायदे होते है। सबसे पहले तो कहानी सुनते समय बच्चे सब्र से सुनना सीखते है और उनकी एकाग्रता से सुनने की शक्ति पैनी होती जाती है। बच्चों की स्मरण-शक्ति का भी अच्छा-खासा प्रशिक्षण होता है कहानी सुनने की प्रक्रिया में। कहानी को समझने व अन्य लोगों को सुनाने के लिए बच्चे को कहानी के पात्र, घटनाओं व घटना-क्रम को ठीक से याद रखना पड़ता है। वास्तव में कहानियों के कई पात्र तो सदैव हमारे साथ रहते है । किसी के सपनों में अर्जुन बसा है तो

छपी हुई सामग्री स्थायी होती है। बच्चे बार-बार उसे पढ़ सकते हैं । यदि सामग्री मनोरंजक व सार्थक है, तो वे खुद उसे बार-बार पढ़ना चाहेंगे। आप तो बस अधिक से अधिक प्रभावशाली ढ़ग से बच्चों के सामने कहानी पढ़ें और उन्हें खुद कहानी पढ़ने का मौका दें । शेष वे स्वंय सीख जायेंगे ।

किसी के ख्यालों में भीम; कोई मन-ही-मन बन्दर व मगरमच्छ की बातचीत दोहराता है तो कोई खरगोश व शेर की। तीसरी बात, कहानी सुनने-सुनाने से कल्पना-शक्ति का खूब विकास होता है । कहानी का संसार ऐसा है जहाँ न तो व्याकरण के नियम, न गणित का भय, न विज्ञान का डर और न सामाजिक विज्ञान की बोरियत। बच्चे अपनी कल्पना शक्ति से कहानी के कई वैकल्पिक जाल बुनते है व उसके अधिक से अधिक रोमांचकारी अंत तलाश करते है। आपने देखा होगा कि एक ही कहानी सुनाने का हर व्यक्ति का अलग अंदाज होता है। कहानी बच्चे के लिए एक सार्थक दुनिया है।

चौथी बात यह कि बच्चों को पढ़ना-लिखना सीखाने का पढ़कर कहानी सुनाने से अधिक बेहतर तरीका और कोई नहीं। जो कहानी बच्चे पहले से जानते है उसे खुद पढ़ना चाहते है, पढ़कर दूसरों को सुनाना चाहते है, उसके बारे में कुछ लिखना चाहते है, अपनी इच्छा से कहानी को आधार बनाकर चित्र बनाना चाहते है। शिक्षा का, बच्चों के लिए सार्थक शिक्षा का, इससे सशक्त माध्यम और क्या होगा? हम सबका अनुभव है कि जिन को माँ-बाप या अध्यापक पढ़कर कहानी सुनाते है, पढ़ना जल्दी सीख जाते है । बच्चे के सामने किताब रखकर कहानी सुनाने का आपको भी अनुभव होगा। ख़ासकर ऐसी कहानी जो बच्चे ने पहले से सुन रखी हो। आपके पढ़ने से पहले ही बच्चे अगला शब्द या वाक्य पढ़ लेते है। अक्षर, शब्द, वाक्य व चित्र की पहचान कितनी सहज हो जाती है बच्चे के लिए। ध्यान देने योग्य बात यह है कि बच्चा समझकर पढ़ना सीख रहा है।

वास्तव मे पढ़ना सीखने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि बच्चे वही चीज़ पढ़े जो उनके लिए अर्थ रखती हो । बिना किसी संदर्भ के वर्ण पहचानने, बाराखड़ी याद करने व शब्दार्थ करने से कोई लाभ

नहीं । हम सब जानते है कि वर्षो ऐसा करने पर भी बच्चे समझकर पढ़ नहीं पाते । उपयुक्त, मनोरंजक, सार्थक व चुनौतीपूर्ण संदर्भ नहीं होंगे तो बच्चे पढ़ना नही सीखेगे । इस तरह की पाठ्य-सामग्री के लिए कहानियाँ ही सबसे उचित है । बच्चे जो कहानी एक बार सुन लेते है उसे बार-बार सुनना चाहते हैं और साथियों के साथ बाँटना चाहते हैं । बच्चे अक्सर ज़िद करते है कि माँ-बाप उनसे कहानी सुनें । बच्चे के दिमाग में एक सुव्यवस्थित संरचना तैयार पड़ी है । इस कहानी को बच्चा अपना समझता है । एक अध्यापक कक्षा में इस संरचना को लेकर क्या-क्या कर सकता है ?

ध्यान रहे कि कहानी के शैक्षणिक प्रयोग पर चर्चा इसलिए नही हो रही कि बच्चे इससे ध्वनि-वर्ण संबंध को जान लें, वर्तनी की गलतियाँ सुधार लें या व्याकरण व शब्द-संरचना के नियम सीख लें। ये मुश्किल काम है । भाषा वैज्ञानिक अभी तक समझ नही पाये कि बच्चे इतनी जटिल बातें सहज ही कैसे सीख लेते है । हाँ इतना निश्चित रूप से पता है कि संदर्भ-रहित तरीकों से सीखाने पर बच्चे अक्सर इन्हें नहीं सीख पाते । यह भी काफ़ी हद तक साफ़ है कि यदि सामग्री मनोरंजक व सार्थक हो तो बच्चे स्वत: ही सहज रूप से ये सब सीख जाते हैं । बोल-चाल की भाषा के सभी नियम - चाहे वे ध्वनि-संरचना के हों या शब्दों के या व्याकरण के - बच्चा स्वयं सीख लेता है । और वह भी तीन चार साल की आयु में । बोल-चाल की भाषा तो अस्थायी होती है । अभी बोला, अभी ख़त्म। लेकिन छपी हुई सामग्री स्थायी होती है। बच्चे बार-बार उसे पढ़ सकते है । यदि सामग्री मनोरंजक व सार्थक है, तो वे खुद उसे बार-बार पढ़ना चाहेंगे। आप तो बस अधिक से अधिक प्रभावशाली ढ़ग से बच्चों के सामने कहानी पढ़ें और उन्हें खुद कहानी पढ़ने का मौका दें । शेष वे स्वंय सीख जायेंगे ।

इसी अंक में 'दयालु गाड़ीवान और चालाक मगरमच्छ' नाम की कहानी छपी है । आप कक्षा में ऐसी कहानी को लेकर क्या क्या कर सकते है। किस स्तर पर क्या संभव है यह निर्णय तो स्वयं आपको लेना होगा। पहले तो बच्चों को कहानी सुनाइये बिना किसी किताब के । कहानी सुनाने के अनेक रोचक ढ़ग है। आपको सोचना पड़ेगा कौन-सा ढ़ग इस कहानी के लिए उपयुक्त रहेगा । तैयारी करनी पड़ेगी । हो सकता है आप चित्रों का प्रयोग करना चाहें या हाथ पर चलने वाले पुतलों का । कहानी सुनाने के बाद कुछ बच्चों से भी कहानी सुननी चाहिए । इसके बाद कहानी पढ़ने की प्रकिया हो सकती है । हर बच्चे के पास कहानी होनी चाहिए । यह जरूरी नहीं, अपेक्षा भी नहीं, कि हर बच्चा कहानी पूरी तरह से पढ़ सके। लेकिन सुनी व छपी कहानी में एक गहरा संबंध बनने लगेगा- और यह संबंध बच्चे की अपनी चेतना व संवेदना का हिस्सा होगा कौन-सा चित्र कहाँ छपा है; उसके नीचे क्या लिखा है; कहाँ वर्णन है और कहाँ संवाद; शुरू में क्या है और अंत मे क्या आदि - ऐसे प्रश्न पढ़ने की प्रकिया का बहुत महत्वपूर्ण अंग है। बच्चे उन्हीं कविताओं व कहानियों से पढ़ना-लिखना सीखते है जिन्हें वे अपना समझते हैं ।

जब बच्चों को कहानी अपनी लगने लगे तो उन्हें छोटी-छोटी टोलियों में बाँटकर अनेक महत्वपूर्ण गतिविधियाँ की जा सकती है । हर बच्चा 'दयालु गाड़ीवान' की कहानी को अपने ढ़ग से सुना सकता है । पात्रों के चित्र बना सकता है । मिलजुल कर बच्चे कहानी को एक नाटक में बदल सकते है । कौवे व मगरमच्छ, मगरमच्छ व दयालु गाड़ीवान, मगरमच्छ व खरगोश आदि में हुए संवादों को नाटकीय ढ़ग से प्रस्तुत कर सकते है । 'दयालु गाड़ीवान' में बच्चों की कल्पनाशक्ति के लिए भी काफ़ी जगह है । यह कहानी है योजनाएँ बनाने की । हर पात्र यहाँ योजना बनाने में लगा है । कहानी में किसी भी योजना का वर्णन नहीं है - चाहे वह कौवे की हो या मगर की या खरगोश की । योजना का पता हमें तभी लगता है जब वह क्रियान्वित होती है । बच्चे इन योजनाओं के बारे में सोच सकते है और कई तरह की नई-नई योजनाओं के बारे में सोच सकते है । ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहानी के बारे में बातचीत करने में, उसका नाटकीयकरण करने में चित्र बनाने में, मगरमच्छ, कौवा, खरगोश या गाड़ीवान बनकर संवाद दोहराने में मुख्य मुद्दा भाषा नहीं है । हमारा ध्यान ध्वनि-संरचना या वाक्य संरचना पर नहीं । हमारा ध्यान इस बात पर है कि बच्चे ऐसी गतिविधियाँ कर रहे है जो उनके निए सार्थक है और जिनके द्वारा वे कहानी को 'अपना' कह सकते हैं । इन गतिविधियों में इस बात पर जोर देने से कोई फ़ायदा नही कि बच्चे शुद्ध

कहानी पढ़नें की प्रक्रिया हो सकती है । हर बच्चे के पास कहानी होनी चाहिए । यह जरूरी नहीं, अपेक्षा भी नहीं, कि हर बच्चा कहानी पूरी तरह से पढ़ सके। लेकिन सुनी व छपी कहानी में एक गहरा संबंध बनने लगेगा- और यह संबंध बच्चे की अपनी चेतना व संवेदना का हिस्सा होगा । कौन-सा चित्र कहाँ छपा है; उसके नीचे क्या लिखा है; कहाँ वर्णन है और कहाँ संवाद; शुरू में क्या है और अंत मे क्या आदि - ऐसे प्रश्न पढ़ने की प्रक्रिया का बहुत महत्वपूर्ण अंग हैं।

मानकीकृत हिन्दी बोलें । यह बहुत अच्छा मौका है बच्चों को अपनी-अपनी भाषा प्रयोग करने की स्वतन्त्रता देने का । कक्षा में सदैव उपलब्ध व निरन्तर दबाई जाने वाली बहुभाषिता का उपयोग करने का यह बहुत अच्छा मौका है ।

एक बार बच्चे कहानी को अपना लें तो ध्वनि, शब्द, वाक्य व संवाद के स्तर पर अनेक मजेदार, विवेकशील व चुनौतीपूर्ण गतिविधियाँ की जा सकती है । इन गतिविधियों की कोई सीमा नहीं - न तो गिनती में और न विषयगत गहराई में । ये गतिविधियाँ करते-करते बच्चे अक्सर ऐसे तथ्य व नियम निकाल लाते है कि अध्यापक को भी सीखने को बहुत कुछ मिल जाता है । ऐसे पलों में स्तब्ध से हम बच्चों की प्रतिभा व कौशल पर हैरान होते है और उनकी दाद देते है ।

उदाहरण के लिए बच्चों को छोटी-छोटी टोलियों में बाँटकर कह सकते है: कहानी में से ऐसे शब्द निकालकर लिखो ; देखिए, अवलोकन, पढ़ने व लिखने की प्रक्रिया भी साथ-साथ हो रही है जिनमें कोई मात्रा दिखाई नहीं देती । जैसे लग, यह, मगर, मन, चल

एक बार बच्चे कहानी को अपना लें तो ध्वनि, शब्द, वाक्य व संवाद के स्तर पर अनेक मजेदार, विवेकशील व चुनौतीपूर्ण गतिविधियाँ की जा सकती हैं । इन गतिविधियों की कोई सीमा नहीं – न तो गिनती में और न विषयगत गहराई में । ये गतिविधियाँ करते–करते बच्चे अक्सर ऐसे तथ्य व नियम निकाल लाते हैं कि अध्यापक को भी सीखने को बहुत कुछ मिल जाता हैं ।

ध्यान देने योग्य बात यह है कि कहानी के बारे में बातचीत करने में, उसका नाटकीयकरण करने में चित्र बनाने में, मगरमच्छ, कौवा, खरगोश या गाड़ीवान बनकर संवाद दोहराने में मुख्य मुद्दा भाषा नहीं हैं ।

आदि । सबसे पहले तो बच्चों को यह अहसास होगा कि ऐसे शब्द वास्तव में बहुत कम हैं । क्या मात्रा यानि स्वर के बिना शब्द बन सकते है ? 'लग' व 'चल' के 'ल' में क्या अन्तर है ?

लग = ल् + अ + ग्

चल = च् + अ + ल्

यानि 'लग' के 'ल' में 'अ' की मात्रा है, 'चल' के 'ल' में नहीं । थोड़ी सी चर्चा व उदाहरणों के बाद बच्चे स्वयं हिन्दी ध्वनि-संरचना के कुछ मुख्य नियम स्वयं बताने लगेंगे । एक नियम तो यह कि हिन्दी में शब्दान्त 'स्वर' नहीं बोला जाता । 'लग' के 'ग' में 'अ' नहीं और 'चल' के 'ल' में भी 'अ' नहीं । दूसरी बात, यह जल्दी ही साफ हो जायेगा कि हिन्दी में, ठीक वैसे ही जैसे कि संसार की अन्य भाषाओं में, शब्द की संरचना

व्यंजन-स्वर - व्यंजन-स्वर

यानि CVCV होती है । स्वर के बिना शब्द नहीं बन सकता । अक्सर व्यंजन भी रहते है शब्दों में । पर कई बार बिना व्यंजनों के भी शब्द बन सकते है । ये सब बातें बच्चे स्वयं कहानी से लिए गये शब्दों की सूची का वर्गीकरण कर बना सकते हैं । उसमें कोई ध्वनि-विज्ञान विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं । यथा,

V: आ, ओ आदि (केवल स्वर से बने शब्द)

CV: की, या, से, कि, के, ही, ने आदि । (देखिए 'कि' में 'इ' लिखी पहले जाती है, लेकिन बोली 'क' के बाद ही जाती है, इसलिए CV)

VC: एक, अब, उड़, उन, उस आदि ।

CVC: दिन, बात, कान, लग, मन, बार, पास आदि ।

CVCV: नदी, रहा, पानी, भूखा, गाड़ी, वाला देखा, गिरा, दिया आदि ।

बच्चों से कहिए कि इसी प्रकार निम्न शब्दों की संरचना लिखें :

बेवकूफ, गाड़ीवान, धोखेबाज, कमज़ोर, बैलगाड़ी, पलटाने, उपकार, फटाफट ।

अब हर टोली के लिए एक इनामवाला प्रश्न: कहानी में ऐसे शब्द ढूंढ कर लिखो जिनमे दो व्यंजन साथ-साथ आते हों यानि CCVC या CVCC आदि ।

शब्दों के स्तर पर गतिविधि देखिये । बच्चे एक बार फिर से कहानी को पढ़ते है । अब शायद तीव्र गति से । इस बार ऐसे शब्दों की सूची बनाते है जो दोहराये जाते है, यथा, किनारे-किनारे । ऐसे शब्द जिनकी संरचना है X-X । सब टोलियों की सूची मिलाकर कुछ ऐसे सूची होगी :

किनारे-किनारे, उड़ते-उड़ते, धीरे-धीरे, पीछे-पीछे, बड़े-बड़े, सोचते-सोचते, साथ-साथ, खुशी-खुशी

शायद आपकी कक्षा में कई बच्चे हों जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है। क्या उनकी भाषा में भी यह संरचना है? सभी भारतीय भाषाओं में (चाहे वह आर्य परिवार की हों या द्रविड़ या मुण्डा) यह संरचना खूब इस्तेमाल होती है। चर्चा का विषय है कि 'घर' और 'घर-घर' कहने में क्या अन्तर है ?

'धीरे' व 'धीरे-धीरे' कहने में क्या अन्तर है । क्या हिन्दी में X-X ही संरचना है ? क्या कुछ ऐसे भी शब्द है जहाँ पहले शब्द का कुछ हिस्सा ही दोहराया जाता है । यथा 'घर-वर' यानि X-X´ 'घर-घर' व 'घर-वर' कहने में क्या अन्तर है ? क्या शब्दांश दोहराने का कोई नियम है ? X-X की जो सूची अभी बनाई है उसे X-X´ की तरह लिखें:

किनारे-विनारे
उड़ते-वुड़ते
धीरे-वीरे ।

रोजमर्रा के अन्य शब्द भी जोड़ सकते है:

चाय-वाय, खाना-वाना,
खिड़की-विड़की, फोन-वोन,
तार-वार, कुर्सी-वुर्सी आदि ।

X-X´ का क्या नियम है । X-X व X-X´ के अर्थो में क्या अन्तर है ?

ऐसी अनेक गतिविधियाँ आप स्वंय सोच सकते है । कहाँ चन्द्रबिन्दु लगेगा और कहाँ उसी ध्वनि के लिए केवल बिन्दु, बच्चे इसी प्रकार के अवलोकनों से स्वंय सीख सकते है । 'पहुँचना' में चन्द्रबिन्दु है पर 'दोनों' में केवल बिन्दु । इसी तरह के और शब्द ढूँढिये व अपने-अपने नियम बनाइये । दिमागी कसरत, अवलोकन व विशलेषण और बात ही बात में एक ऐसी बात की समझ जिसको लेकर अध्यापक व माँ-बाप बच्चों की गलतियों को लेकर परेशान रहते है ।

अब थोड़ा आगे बढ़ें ध्वनि, लिपि व शब्दों से । आइये बच्चों के साथ मिलकर कहानी फिर से लिखते हैं । लेकिन अब कहानी के पात्र है:

मगरमच्छ की पत्नी
कौवे की पत्नी
गाड़ीवान की पत्नी
खरगोश की पत्नी

(क्या इन सब के लिए हिन्दी मे शब्द है ? खरगोशानी चलेगा क्या ? मगरमच्छी ? कौवी ? गाड़ी .....)

अपनी अपनी टोली में बैठे बच्चे कहानी का वह अंश फिर से लिख रहे है जो उन्हें अच्छा लगता है । यथा:

बेचारी मगरमच्छ की पत्नी थकी-हारी घिसटती गई, परन्तु धीरे-धीरे वह कमज़ोर होती जा रही थी और आखिरकार पस्त होकर वहीं गिर पड़ी । वह दुष्ट कौवे की पत्नी उसे अपनी नदी से करीब तीन मील दूर ला चुकी थी ।

आपस में खूब बातचीत का मौका है यहाँ । खूब चर्चा का विषय है कि पात्रों का लिंग बदलने पर वाक्य के कौन-कौन से शब्द किस-किस तरह से बदल जाते है ।

वाक्य व संवाद के स्तर पर इस तरह अनेक गतिविधियाँ आप स्वंय बना सकते है । अनुवाद का प्रयोग कर सकते है, कहानी को अलग-अलग तरीकों से लिखवा सकते है । ये चिन्ता मत कीजिए कि बच्चे लंबे-लंबे वाक्यों से घबरा जायेंगे । यदि वाक्य सार्थक व मजेदार है तो नये शब्द या लंबे वाक्य बच्चों को तंग नही करते । शब्दकोष से तो हम बहुत थोड़े शब्द सीखते है । 'दयालु गाड़ीवान .....' कहानी में एक वाक्य है: तभी एक आदमी बैलगाड़ी लिए वहाँ से गुजरा और मगरमच्छ को वहाँ पड़े रोते देखकर उसने अपनी गाड़ी छोड़ी और ज़मीन पर घुटनों के बल झुककर यह देखने लगा कि क्या वह इस अभागे जानवार की कुछ मदद कर सकता है ।

इस वाक्य में 41 शब्द है ? क्या यह छोटा वाक्य है ? इसमें कितने वाक्य होंगे:

एक आदमी था ।
आदमी बैलगाड़ी लाया ।
आदमी वहाँ से गुजरा ।
आदमी ने मगरमच्छ को देखा ।
मगरमच्छ सड़क पर पड़ा था ।
मगरमच्छ रो रहा था ।
आदमी ने गाड़ी छोड़ी ।
आदमी जमीन पर घुटनों के बल झुका ।
आदमी देखने लगा ।
आदमी अभागे जानवर की मदद कर सकता है ।

ऐसे कौन से संरचनात्मक शब्द है जिनके प्रयोग से ये सारे वाक्य एक वाक्य बन जाते है: से, और, को, ने, कर, कि आदि । कर का प्रयोग करते हुए कई वाक्यों को मिला सकते है:

राम घर आया ।
राम ने खाना खाया ।
राम ने घर आकर खाना खाया ।

यदि बच्चों को 'घुटनों के बल' या 'अभागे' का अर्थ नहीं मालूम, तो सीखने का इस तरह के संदर्भो में प्रयोग से बेहतर तरीका और कोई नहीं । सार्थक संदर्भो में भाषा के प्रयोग से ही भाषा आती है । भाषा के प्रति संवेदनशीलता के लिए, भाषा की प्रकृति व संरचना समझने के लिए व अवलोकन व विश्लेषण की वैज्ञानिक प्रक्रिया से गुजरने के लिए भाषा को लेकर नई-नई गतिविधियाँ सोचिए । बिना संदर्भ के नए-नए शब्द सीखने, उनके अर्थ रटवाने व व्याकरण के अर्थहीन नीरस नियम बताने से कोई लाभ नहीं । व्याकरण के नियम व भाषा लिखने के तौर-तरीके बच्चे स्वंय खोज लेते है । मज़ा खोजने में है ।

कहानी सुनाने की जरूरत

कृष्ण कुमार

यह बड़े अफसोस की बात है कि हमारे प्राइमरी स्कूलों में पहली दो कक्षाओं के लिए प्रतिदिन कहानी सुनाने की कोई अलग 'घंटी' नहीं होती । यदि ऐसी व्यवस्था होती तो बच्चों को स्कूल में टिकाए रखने की समस्या कम से कम एक हद तक सुलझ जाती। बहुत से लोग कहेंगे कि मै इस समस्या की गंभीरता की अवहेना कर रहा हूँ। बहुत सम्भव है कि मेरा सुझाव सुनकर कई ऊँचे अधिकारी हिकारत के भाव से मुस्कुराएँ । उनके विशाल अनुभव और प्रशासनिक ज्ञान ने यह समझ अवश्य उनके दिमाग से हटा दी होगी जो मेरी समझ में उनके पास एक समय में जरूर रही होगी, कि कहानी सुनाने का बच्चों पर एक जादुई असर होता है ।

यह बहुत ही गहरे अफ़सोस की बात है कि हमारी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाएँ भी कहानी सुनाने को गम्भीरता से नहीं लेती, हालाकि उनमें से कुछ अपने पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने के महत्त्व का जिक्र कर देती हैं ।

मेरे मन में एक ऐसे दिन की कल्पना है जब छोटे बच्चों को पढ़ाने वाले हर शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि कम से कम तीस पारम्परिक कहानियों पर उसका अधिकार हो । अधिकार से मेरा आशय है कि ये कहानियाँ उसे अच्छी तरह याद हों ताकि वह उन्हें इत्मीनान और आत्मविश्वास के साथ सुना सके । यह एक ऐसे समाज के लिए कोई बड़ी बात नहीं है जिसके पास हजारों कहानियों की एक लम्बी विरासत है । तीस ऐसी कहानियाँ, जिन्हें अध्यापक अपनी मर्जी से जब चाहे सुना सके, प्राइमरी स्कूल के पहले दो दर्जो

मेरे मन में एक ऐसे दिन की कल्पना है जब छोटे बच्चों को पढ़ाने वाले हर शिक्षक से यह अपेक्षा की जाएगी कि कम से कम तीस पारम्परिक कहानियों पर उसका अधिकार हो । अधिकार से मेरा आशय है कि ये कहानियाँ उसे अच्छी तरह याद हों ताकि वह उन्हें इत्मीनान और आत्मविश्वास के साथ सुना सके ।

का माहौल बदल कर रख देंगी । शर्त इतनी भर है कि दैनिक पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने को एक सम्मानजनक जगह इस खातिर दी जाए कि कहानी सुनाना अपने आप में महत्वपूर्ण है ।

कहानियाँ कहाँ से लाएँ

पिछले पैराग्राफ में मैंने एक विशेषण का इस्तेमाल किया है जिसे मै अब आगे बढ़ने से पहले स्पष्ट करना चाहता हूँ । मैंने लिखा है कि मै पारम्परिक कहानियाँ सुनाने के पक्ष में हूँ युवा अध्यापकों को कहानी सुनाने का प्रशिक्षण देने का मेरा अनुभव बताता है कि जब उनसे सुनाने लायक कहानियाँ तलाशने को कहा जाता है, तो वे प्राय: बच्चों की किसी पत्रिका में छपी हुई कहानियाँ ले आते है। उनमें से कुछ लोग कॉमिक्स कथाएँ उठा लाते है और कुछ लम्बे चुटकले और असली घटनाओं के बयान याद करके ले आते हैं यह सही है कि इस किस्म की सामग्री को भी 'कहानी' की श्रेणी में रखा जा सकता है, लेकिन इस तरह की प्रत्येक कहानी से हम प्राइमरी स्कूल में पढ़ने वाले छ: या सात साल के बच्चों पर जादुई असर करने की उम्मीद नहीं कर सकते।

परम्परा से मिली हुई कहानियों में ऐसी विशेषताएँ होती है जो समकालीन कहानियों में, जिन्हें हम विविध रूपों और माध्यमों में देखते है, अनिवार्यत: नही पाई जाती । इन विशेषताओं की चर्चा हम जल्दी करेगें, लेकिन पहले में पारम्परिक कहानियों के कुछ स्त्रोतों का जिक्र करना चाहूँगा । सबसे पहले पंचतंत्र, जातक, महाभारत सहस्र रजनीचरित्र, विक्रमादित्य की कहानियाँ और विभिन्न इलाकों की लोक-कथाएँ सहज और समृद्ध स्त्रोतों की श्रेणी में रखी जा सकती हैं । इनके बाद हम कथासरित्सागर, गुलिस्ताँ और बोस्ताँ की कहानियाँ और दुनिया भर की लोक-कथाओं और परी-कथाओं को रख सकते है । ये स्त्रोत आसानी से उपलब्ध नही है । इसलिए यदि कोई पाठ्यक्रम में कहानी सुनाने को एक नियमित जगह देना चाहता है तो उसे इन तमाम स्त्रोतों से चुनी गई कहानियों का एक संकलन बनाना होगा ।

कहने लायक कहानी

एक अच्छी कहानी में कौन-सी विशेषताएँ होती है, यह जानने के लिए एक सरल रास्ता एक ऐसी कहानी की जाँच करने का है जिसे बच्चे पीढ़ियों से आन्दपूर्वक सुनते आ रहे है । पंचतंत्र की शेर और खरगोश की कहानी एक ऐसा उदाहरण है । इस कहानी का

खरगोश
कैसे बुद्धिमान कहलाया जाने लगा

बहुत समय पहले की बात है, एक दिन जंगल का राजा शेर भोजन के लिए रोज-रोज शिकार करते-करते थक गया। उसने सोचा, चूंकि सब जानवर निर्विवाद रूप से उसे अपना राजा मानते हैं, इसलिए वह शिकार के पीछे भागने के बजाए, जानवरों को आज्ञा दे देगा कि उनमें से कोई एक रोजाना उसकी भूख मिटाने के लिए आ जाए।

उसने जंगल के जानवरों को अपने पास बुलाया और कहा- 'मेरे प्रजागणों, मुझे अपने भोजन के लिए रोजाना शिकार करना होता है, इससे सारा जंगल मेरे कारण डरा रहता है। मैं तो रोज केवल एक ही जानवर को मार कर खाता हूँ, पर आप सब डरे-डरे रहते हैं। अब हम लोग एक तर्क संगत व्यवस्था कर लेते हैं। रोज सुबह होते ही एक जानवर मेरे द्वारा खाए जाने के लिए अपने आप को मेरे सामने प्रस्तुत करेगा। ये आप आपस में फैसला कर सकते हैं कि वह कौन सा जानवर

कथानक उतना आसान नहीं है जितना हम कहानी से अपने परिचय के कारण मान लेते है । क्यों न हम पहले इस कहानी के प्रमुख मोड़ याद कर लें ।

कहानी में एक दिन वह आता है जब नन्हें खरगोश को बूढ़े शेर के सामने पेश होना होता है । शेर के दरवाजे पहुँचने तक खरगोश ने इतनी देर कर दी है कि शेर भूख के मारे पागल हो रहा है । यह निर्णायक क्षण शेर के साथ किसी भी तरह की सौदेबाजी के लिए एकदम अनुपयुक्त है क्योंकि शेर गुस्से से बुरी तरह भरा बैठा है, लेकिन अनुपयुक्त क्षण में अपनी बात रखता है । उसे इतनी देर कैसे

यह कहानी एक ऐसे छोटे प्राणी की है जो एक बड़े, ताकतवर प्राणी द्वारा पैदा की गई मुसीबत से जूझ रहा है । इस मुसीबत से बचने के लिए छोटा प्राणी एक ऐसी तरकीब का प्रयोग करता है कि जिसे हम आमतौर पर अनैतिक कहते हैं । इस तरकीब पर अमल करते समय खरगोश व्यक्तित्व के कुछ उम्दा गुणों की मिसाल पेश करता है । इन गुणों में साहस, खतरे के सामने आत्मविश्वास, किसी घटना के अंतिम क्षण तक अपना दिमाग ठंडा रखने की क्षमता, और अपने से ज़्यादा ताकत और उम्र वाले से उचित बरताव करना शामिल हैं ।

हो गई ? रास्ते में एक दूसरे शेर से मिलने की बात पूरी तरह झूठ है, लेकिन यह बात भूखे, नाराज शेर के शाही दिमाग में बैठ जाती। अब वह पहले अपने प्रतिद्वंदी से निपटना चाहता है, और इसके लिए वह खरगोश के साथ उस कुएँ की तरफ चल पड़ता है जहाँ दूसरे शेर के रहने की बात उसे बताई गई है । इस दूसरे निर्णायक क्षण में खरगोश अपनी धोखबाजी और शेर की पागल नाराजगी और ईर्ष्या - जिसे उसी ने जगाया है - पर भरोसा करके आगे बढ़ता है । कुएँ में अपनी परछाई देखकर शेर आपा खो बैठता है और कूद कर मर जाता है ।

आइए, इस पुरानी, परिचित कहानी को ज़रा बारीकी से देखें । पहली बात तो यह है कि कहानी की विषयवस्तु में कोई नहीं है । उल्टे, यह

कहानी सीधे-सीधे इस तरह के गम्भीर सवालों से जूझती है, जैसे कि किसी की पाशविक ताकत के सामने या मौत के वास्तविक खतरे से अपने को कैसे बचाया जाए । आमतौर पर बच्चों से बातचीत के दौरान हम ऐसे प्रश्नों को ही उठाते, लेकिन ज़ाहिर है कि बच्चों की ऐसे प्रश्नों में गहरी रूचि होती है । हम पूछ सकते है कि इस रूचि का क्या कारण है पर इस सवाल की चर्चा मैं कुछ देर में करूंगा । इस बीच मैं एक और बड़ी विशेषता पर विचार करना चाहता हूँ । यह कहानी एक ऐसे छोटे प्राणी की है जो एक बड़े, ताकतवर प्राणी द्वारा पैदा की गई मुसीबत से जूझ रहा है । इस मुसीबत से बचने के लिए छोटा प्राणी एक ऐसी तरकीब का प्रयोग करता है कि जिसे हम आमतौर पर अनैतिक कहते है ।

इस तरकीब पर अमल करते समय खरगोश व्यक्तित्व के कुछ उम्दा गुणों की मिसाल पेश करता है । इन गुणों में साहस, खतरे के सामने आत्मविश्वास, किसी घटना के अंतिम क्षण तक अपना दिमाग ठंडा रखने की क्षमता, और अपने से ज्यादा ताकत और उम्र वाले से उचित बरताव करना शामिल है ।

हमें इस बात पर भी गौर करना चाहिए कि कहानी कितनी तेज़ गति से आगे बढ़ती है । शुरूआत में एक अजीब-सी व्यवस्था लागू की जाती है जिसके तहत रोज़ एक जानवर स्वेच्छा से बूढ़े राजा का शिकार बनेगा । इस तरह की दैनिक व्यवस्था स्थापित होने के बाद जल्दी ही छोटे खरगोश की बारी आती है और कहानी का केन्द्रीय हिस्सा प्रकट होता है । बाकी घटनाएँ बहुत तेजी से घटती है, क्योंकि अपने को बचाने की एक खतरनाक रणनीति तय कर लेने के बाद खरगोश एक भी क्षण बरबाद नहीं कर सकता । कहानी सुनने वाला संवादों के जरिए एक के बाद एक स्थिति से धक्का खाते हुए आगे बढ़ता है । यह स्पष्ट रहता है कि सुनने वाले के पास इस बात का कोई विकल्प नहीं है कि वह स्थिति को खरगोश की निगाह से देखें ।

यह संक्षिप्त विश्लेषण उन कारणों की पहचान के लिए पर्याप्त है जिनसे इस कहानी को बच्चों के बीच भारी लोकप्रियता मिली है । सबसे पहली बात यह है कि कहानी उन्हें एक ऐसा चरित्र सा हीरो देती है जिसके साथ वे पूरा तादात्म्य बिठा सकते हैं । यह चरित्र है खरगोश । कहानी में उसकी भूमिका उसी तरह की चुनौतियों और मुसीबतों से गुजरती है जैसी कि बच्चे अपने दैनिक जीवन में अक्सर महसूस करते है । वह छोटा और शक्तिहीन है; उसे एक ऐसा काम करना है जो

अब तक यह स्पष्ट हो गया होगा कि बच्चों के लिए एक अच्छी कहानी चुनने का नैतिकता या नैतिक शिक्षा से कोई संबंध नहीं है या कम से कम सीधा संबंध नही है । अधिक गहरे स्तर पर खरगोश और शेर की कहानी में एक प्रेरक बात है । वह दिखाती है कि खतरे के सामने दिमाग ठंडा रखने के क्या फायदे है; कहानी यह भी दिखाती है कि सोच–समझ और कल्पना से काम लेना कितना महत्वपूर्ण है ।

होगा।
इस तरह मैं शिकार करने की परेशानी से बच जाऊंगा। इसका मतलब यह भी होगा कि आप सब जंगल में निडरता से घूम सकेंगे। जानवरों ने आपस में विचार-विमर्श किया और माना कि यह एक तरीका है जो सभी के लिए फायदेमंद है। उन्होंने तय किया कि हर रोज शाम को एक पर्ची निकाली जाएगी। जिसका नाम पर्ची पर लिखा होगा वही अगले दिन शेर का भोजन बनेगा। यह नई योजना तुरन्त लागू कर दी गई; शाम को पर्ची निकाली जाती और सुबह एक बेचारा जानवर शेर के नाश्ते के लिए पेश हो जाता। यह तो सच है कि यह उस जानवर के लिए बहुत खराब बात होती, परन्तु इससे बाकि सभी जानवरों को घात लगाए घूमते शेर का डर नहीं रहता था, वे जंगल में आजादी से रह सकते थे। योजना सही तरह काम करती लग रही थी।

एक शाम को जब खरगोश के नाम की पर्ची निकली तो उसने यह घोषणा कर दी कि उसका, शेर का भोजन बनने का कोई इरादा नहीं है।

इस पर लोमड़ी बोली- 'शेर अपना वादा रख रहा है और

अब हम निडरता से बाहर घूम सकते हैं।'

बन्दर बोला- 'खरगोश! अगर तुम नहीं गए तो तुम हम सब को खतरे में डालोगे।' मैं इस निष्ठुर को हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा, खरगोश ने ऐसे विश्वास के साथ कहा जैसा विश्वास वह असल में महसूस नहीं कर रहा था। 'देखना! कभी तुम सब मुझे धन्यवाद दोगे।' जंगली मुर्गा बोला- 'अगर हमने देखा कि शेर फिर शिकार के लिए घूमने लगा है तो हम सब तुम्हें शुक्रिया नहीं कहेंगे।' 'यह सब तुम मुझ पर छोड़ दो'- खरगोश बोला और आराम से लेट गया। परन्तु खरगोश सोया नहीं। वह घंटों लेटा-लेटा सोचता रहा कि ऐसा क्या हो सकता है, जिससे वह अपनी और अपने साथियों की मदद कर सके और जंगल को उस दुष्ट शेर से छुटकारा मिल जाए। सुबह होते-होते उसे एक उपाय सूझा। ज़ब उसने सब कुछ विस्तार से सोच लिया और उसे तसल्ली हो गई कि उसकी

वह करना नहीं चाहता; उसे एक ऐसे प्राणी के हाथों मारे जाने का डर है जिसके पास पूरी सत्ता भी है और शारीरिक ताकत भी । खरगोश की परिस्थिति के इन पहलुओं से मिलते-जुलते पहलु हर बच्चे की ज़िंदगी में उभरते रहते है । यद्दपि हम उन्हें अक्सर देख नहीं पाते क्योंकि हम माता-पिता और अध्यापक की भूमिकाएँ निभाने में बेहद व्यस्त रहते हैं । उदाहरण के तौर पर हममें से बहुत कम लोग यह जानते है कि अचानक होने वाली मृत्यु का डर बचपन में चिन्ता के सबसे बड़े स्त्रोतों में शामिल है । किसी बड़े और मजबूत व्यक्ति से आमना-सामना होने की आशंका भी इसी प्रकार की चिन्ता पैदा करती है ।

कहानी शुरु होते ही बच्चों का ध्यान इसलिए खींचती है क्योकि बच्चे स्वयं को कहानी में देख सकते है । इसके बाद कहानी में होने वाली घटनाओं से उनके आकर्षण को बल मिलता है । नन्हा खरगोश एक रणनीति चुनता है और कारगार सिद्ध होती है । वह न केवल उसके लिए सफल होती है, बल्कि समस्या को हमेशा के लिए और सबके लिए खत्म कर देती है । छोटे बच्चों का इसी तरह का हल पसन्द आता है । खरगोश की रणनीति के आर्कषण का एक और कारण यह है कि वह बच्चों में हमेशा पाई जाने वाली एक भोली-भाली इच्छा पर आधारित है - बहाना बनाने की इच्छा । देरी से आने के खरगोश द्वारा दिये गए बहाने में एक और आकर्षण यह है कि उसका उद्धेश्य अपनी जान बचाना नहीं, शेर को मारना भी है । वास्तव में खरगोश की दुविधा इसलिए इतनी कठिन है क्योकि वह अन्यायी को जान से मारे बगैर खुद को बचा नहीं सकता । इसी तरह कहानी बच निकलने का एक ज़बरदस्त नाटक पेश करने के लिए बहादुरी से किए गए नाश का इस्तेमाल करती है । यदि उसमें कोई नैतिकता है तो वह आत्म-रक्षा की नैतिकता ही है। इस बात को भी हम तभी ठीक से देख सकते हैं जब हम कहानी को बच्चे की निगाह से देखें । यदि हम बड़ों की निगाह से इस कहानी को देखने की जिद करें तो हम

सबसे पहली बात यह है कि कहानी उन्हें एक ऐसा चरित्र सा हीरो देती है जिसके साथ वे पूरा तादात्म्य बिठा सकते हैं । यह चरित्र है खरगोश । कहानी में उसकी भूमिका उसी तरह की चुनौतियों और मुसीबतों से गुजरती है जैसी कि बच्चे अपने दैनिक जीवन में अक्सर महसूस करते हैं । वह छोटा और शक्तिहीन है; उसे एक ऐसा काम करना है जो वह करना नहीं चाहता; उसे एक ऐसे प्राणी के हाथों मारे जाने का डर है जिसके पास परी सत्ता भी है और शारीरिक ताकत भी । खरगोश की परिस्थिति के इन पहलुओं से मिलते-जुलते पहलु हर बच्चे की ज़िंदगी में उभरते रहते हैं ।

पढ़ने की क्षमता बच्चों का परिचय भाषा में निहित नियमों और सरंचनाओं से कराती है । अच्छी तरह पढ़ने की क्षमता होशियारी से अंदाज लगाते चलने की आदत पर निर्भर है ।

इसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगें कि यह एक अनैतिक कहानी है - जैसी कि वह दरअसल है भी ।

जरूरत क्या है ?

अब तक यह स्पष्ट हो गया होगा कि बच्चों के लिए एक अच्छी कहानी सुनने का नैतिकता या नैतिक शिक्षा से कोई संबंध नहीं है या कम से कम सीधा संबंध नहीं है । अधिक गहरे स्तर पर खरगोश और शेर की कहानी में एक प्रेरक बात है । वह दिखाती है कि खतरे के सामने दिमाग ठंडा रखने के क्या फायदे है; कहानी यह भी दिखाती है कि सोच-समझ और कल्पना से काम लेना कितना महत्वपूर्ण है । लेकिन ये बातें पारम्परिक अर्थ में 'नैतिक शिक्षा' नहीं कही जा सकती । वास्तव में महान पारम्परिक कहानियाँ शायद ही पारम्परिक अर्थ में नैतिक शिक्षा देती हों । हमारे लिए ज़्यादा जरूरी इस बात पर गौर करना है कि कहानी सुनाने का उद्धेश्य बच्चे का नैतिक विकास करना नहीं है । कहानी सुनाने से होने वाले लाभ काफी अलग है, और वे इस प्रकार है ।

कहानियां अच्छी तरह सुनने की क्षमता का विकास करती हैं: अच्छा श्रोता कौन है ? वह जो अन्त तक सुनता रहे । यह बात हम बहुत से लोगों के बारे में नहीं कह सकते । यहां तक कि औपचारिक बहसों के दौरान भी लोग लगातार टोकते रहते हैं । इसका कारण उनकी यह मानकर चलने की आदत है कि उन्हें पहले से पता है कि बोलने वाला क्या कहेगा । एक और कारण यह है कि उनमें सुनने का धैर्य नहीं होता । आश्चर्य की बात नही है कि सुनने को अब सिर्फ़ एक कौशल नहीं, बल्कि एक रवैया माना जाने लगा है जिसे प्रोत्साहित करने के लिए ऊँचे स्तर के प्रबंधन और प्रशासन के कोंस उपलब्ध है। कहानी सुनाने से हमारी ज़िन्दगी के उस निर्णायक दौर में धैर्यपूर्वक सुनने की क्षमता विकसित होती है जब सुननें की आदत और उसमें निहित रवैया जीवन भर चलने वाली आदतों का रूप ले सकते है ।

यह बात थोड़ी अजीब है कि अच्छे श्रोता हमारे उस देश में दुर्लभ हो गए है जहां एक पुरानी और मज़बूत मौखिक संस्कृति रही है । मेरा अंदाज़ है कि इस परिस्थिति का संबंध बचपन में कहानी सुनाने की अवहेलना से है । ऐसा लगता है कि आधुनिक भारत के पास बच्चों को नियमित रूप से कहानी सुनाने का समय नही है । इस कमी के परिणाम अब स्पष्ट होते जा रहे है ।

कहानी सुनाने से अंदाज लगाने का प्रशिक्षण मिलता है: अपनी पसंद की कहानियाँ बच्चे बार-बार सुनना चाहते है । इसका कारण यह है कि कहानी से एक बार अपना परिचय हो जाने पर वे इस परिचय का इस्तेमाल गौर से सुनने की अपनी बढ़ती हुई क्षमता का परीक्षण करने के लिए करते है । स्वाभाविक है कि यह परीक्षण अनजाने में होता है । बच्चों को इस बात से खुशी होती है कि कहानी को दूसरी या तीसरी बार सुनते समय वे सफलतापूर्वक अन्दाज लगा सकते है कि आगे

योजना काम करेगी, तब वह अपने आप को तरो ताजा करने के लिए थोड़ा सो लिया। वह शेर की गुफा तक पहुँचा जब सूरज ऊपर तक चढ़ आया था। शेर बेसब्री से उसका इंतजार कर रहा था और जोर-जोर से गुर्रा रहा था। वह गुस्सा था, क्योंकि एक तो खरगोश का देर से आना उसके अपमान का प्रतीक था और दूसरा वह भूखा भी था। जैसे ही खरगोश आगे बढ़ा, शेर दहाड़ा 'क्या तुम मेरा नाश्ता हो?' 'हाँ, सरकार', खरगोश ने आदर से उत्तर दिया। 'तो फिर तुम देर से क्यों आए?' 'मैं बताता हूँ, सरकार', खरगोश बोला। 'तड़के जब मैं यहाँ आ रहा था तो मुझे एक दूसरे शेर ने रोक लिया। उसने कहा कि मैं आगे नहीं जा सकता क्योंकि वह मुझे नाश्ते में खाना चाहता है। मैंने उनसे मिन्नत की कि मैं नहीं रूक सकता, मुझे जंगल के राजा की आज्ञा के अनुसार, उनके पास पहुँचना है। इस पर वह बहुत गुस्सा हो गया और कहने लगा कि वह ही जंगल का राजा है। 'और', वह दहाड़ा, 'जाओ और जाकर मेरा अधिकार छीनने वाले शेर को कहो कि, मैं यहाँ हूँ और मैं आकर तुम्हें मार डालूंगा। बाकि सभी जानवरों को भी कह दो कि जंगल का असली राजा आ गया है और वह पाखंडी को भगा देगा।' 'इसलिए, सरकार' खरगोश आगे बोला, 'इससे पहले कि आप मुझे अपना नाश्ता बनाएं, मैं आपको सावधान करता हूँ कि आपकी जान को बहुत खतरा है।'

शेर को अपनी भूख और अनादर के कारण बहुत गुस्सा

आ गया। वह जोर से चिल्लाया, 'पाखंडी!' 'पाखंडी तो वह है, मुझे अभी उसके पास ले चलो, मैं उसे दिखाऊँगा कि कौन जंगल का राजा है।'

खरगोश चल पड़ा और उसके पीछे-पीछे चल पड़ा शेर।

'अब ध्यान से चलें', खरगोश फुसफुसाया। 'हम उस बगावती लुटेरे की गुफा तक पहुँच रहे हैं।' वास्तव में वह खरगोश, शेर को एक गहरे कुँए की तरफ जा रहा था। जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने शेर को थोड़ा रूकने को कहा और खुद धीरे से कुएं के पास आया। फिर वह किनारे के ऊपर से नीचे पानी को ध्यान से देखने लगा। उसने अपने छोटे से चेहरे का साफ प्रतिबिम्ब देखा। फिर उसने शेर को आवाज दी और कहा-'वहाँ नीचे देखिए, सरकार, वही है जो आपका शासन छीनना चाहता है।'

शेर गुस्से से त्यौरियां चढ़ाता और बड़-बड़ करता कुएँ की

क्या होगा । अंदाज के सही सिद्ध होने का आनन्द ही वह इनाम है जो कहानी सुनने से एक अनुभवी श्रोता को मिलता है; और यह सिर्फ आनन्द नहीं है । इससे कहानी सुनने वाले बच्चे की अंदाज़ लगाने की क्षमता में विश्वास भी बढ़ता है । सर्वांगीण विकास में इस विश्वास की एक गहरी भूमिका होती है - खासकर पढ़ने की क्षमता के विकास में । यह क्षमता स्कूल के शुरूआती दो वर्षो की सबसे बड़ी चुनौती होती है । साक्षरता और पढ़ने की क्षमता के विकास में अंदाज लगाने की क्षमता के योगदान की विस्तृत चर्चा मैने अपनी पुस्तक ''बच्चे की भाषा और अध्यापक'' में की है ।

अंदाज लगाने की क्षमता का महत्वपूर्ण योगदान अन्य विषयों; विशेषकर गणित और विज्ञान, में भी है । गणित की पढ़ाई में नियमों के इस्तेमाल से समस्या का हल निकालने का सैधांतिक महत्त्व है । कहानियों में भी नियम होते है । फ़र्क यही है कि ये नियम रूपकों की शक्ल में होते है । मिसाल के तौर पर कई कहानियाँ इस नियम का पालन करती हैं कि छोटे प्राणी बड़ों को धोखा देकर विजय प्राप्त करते है । खरगोश और शेर की कहानी में यही होता है । कहानियाँ सुनते-सुनते बच्चे उनमें निहित नियम पकड़ लेते है, और यह पकड़ उनकी अंदाज़ लगाने की क्षमता को बेहतर बनाती है ।

कहानियाँ हमारी दुनिया को फैलाती हैं: मै उस दुनिया की बात कर रहा हूँ जिसे हम अपने सिर या दिमाग में लेकर चलते है । कहानियां उसे इस अर्थ में फैलाती है कि हम उनके जरिये ऐसे लोगों और स्थितियों को जान लेते है जिनसे हमारा वास्ता अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं पड़ा ।

सवाल है कि ऐसे लोगों या स्थितियों को जानने से क्या फ़ायदा है ? फ़ायदा यह है कि वे जीवन का अंग है । भले हम व्यक्तिगत रूप से उन्हें न जानते हों पर वे हमें दिमागी रूप से परेशान करती है, खासकर बचपन में - लेकिन एक सामान्य अर्थ में यह परेशानी जीवनभर चलती है । उदाहरण के लिए छोटे बच्चे बुरे आदमियों की फ़िक्र करते रहते है, भले नही उनके आसपास कोई बहुत बुरा आदमी न हो । इसी तरह वे भीतर ही भीतर यह आशा करते है कि उन्हें किसी बेहद होशियार, सुन्दर या अच्छे इन्सान से मिलने का मौका मिलेगा । आदर्श रूप की कल्पना और भंयकर विपत्ति का डर दोनों ही बाल मनोविज्ञान में शामिल है । पारम्परिक कहानियां इस मनोविज्ञान को व्यंजित करती है, और इसीलिए वे बच्चों को आसानी से खींच लेती है । कहानी सुनने से छोटा बच्चा, जो अभी साक्षर नहीं बना है, अपनी वास्तविक दुनिया से कहीं बड़ी दुनिया के कल्पित रूप का अनुभव पा लेता है ।

एक बात और भी है कि कहानियों से मिलने वाला अनुभव बेतरतीब नहीं होता । उलटे, यह अनुभव हमारी अराजक दुनिया को एक संतोषजनक क्रम या बुनावट में ढाल देता है । एक गहरे अर्थ में यह एक 'नैतिक' बुनावट होती है - लेकिन एक आम अर्थ में नहीं । कमजोर जीतता अवश्य है, लेकिन कई बार गलत साधनों का प्रयोग करके । भूखे शेर से खरगोश का झूठ बोलना एक उदाहरण है ।

कहानियाँ शब्दों को अर्थ देती हैं: अंत में, कहानी कहने का महत्त्व हम बच्चे के भाषाई साधनों के विस्तार में देख सकते हैं। शब्द एक बहुत ही निजी सम्पत्ति होते हैं । वे हमें एक बहुत निजी अर्थ में संसार की चीजों को अलग-अलग नाम देने की क्षमता देते हैं । लेकिन दूसरी तरफ शब्द एक ऐसी सामाजिक सम्पत्ति भी हैं जिसका इस्तेमाल हम दूसरों से अपने अनुभव बाटँने के लिए करते हैं । शब्दो की यह दोतरफ़ा प्रकृति ही उन्हें अर्थ देती है । उदाहरण के लिए बच्चे को अपने निजी अनुभव से यह मालूम होता है कि भूख लगने पर शेर को कैसा महसूस हो रहा

होगा । कहानी बच्चे को 'भूखा' शब्द का अर्थ इस तरह फैलाने में मदद देती है कि उसमें शेर भी शामिल हो जाए । बच्चें जितनी ज्यादा कहानियाँ सुनेंगे, उनकी शब्दावली में उतना ही दूसरों के अनुभवों का अर्थ शामिल करने की सामर्थ्य आती जाएगी । इस तरह देखें तो बचपन में सुनी गई कहानियाँ आगे चलकर पढ़ने की क्षमता का आधार बनती है ।

वास्तव में कहानी के संदर्भ में ऊपर कही गई चारों बातें पढ़ने पर भी लागू होती हैं । पढ़ने की क्षमता बच्चों का परिचय भाषा में निहित नियमों और सरंचनाओं से कराती है । अच्छी तरह पढ़ने की क्षमता होशियारी से अंदाज लगाते चलने की आदत पर निर्भर है । भाषा के नियमों से परिचित होकर बच्चे यह अंदाज लगा लेते हैं कि वाक्य या कथन में आगे क्या आने वाला है इस दृष्टिकोण से कहानी सुनाना बच्चों को साक्षर बनाने के लिए उपयोगी है ।

कौशल पर अधिकार

कहानी सुनाने की कला पर अधिकार पाने के इच्छुक व्यक्ति के लिए ज़रूरी है कि वह स्मृति को गंभीरता से ले । यदि कहने वाले को कहानी ठीक से याद नहीं है तो वह अच्छी से अच्छी कहानी को भी चौपट कर सकता है । याद कर लेने से आत्मविश्वास बढ़ता है और कहानी कहने वाला इत्मीनान महसूस करता है । कहानी सुनने वालों से रिश्ता बनाने के लिए इत्मीनान या चैन बहुत जरूरी है । दूसरी बात यह है कि जब तक कहानी अच्छी तरह याद हो जाती है तो कहने वाला उसे एक खाके या खाली नक्शे की तरह इस्तेमाल कर सकता है । इस नक्शे को अपनी सुविधा या सुनने वालों के मूड के अनुसार भरा जा सकता है । कहानी को छोटा या बड़ा करना बहुत महत्वपूर्ण होता है । किसी दिन आप चाहते हैं कि जल्दी-जल्दी उस बिन्दु पर पहुँच जाएं जहाँ खरगोश शेर के सामने खड़ा है । किसी और दिन आपकी इच्छा होती है कि कहानी के पहले हिस्से को फैलाएं, इस बात की विस्तृत चर्चा करें कि भोजन के इन्तज़ार में शेर के मन में कैसे-कैसे विचार आ रहे होंगे और उसकी गुफा की तरफ जाते हुए खरगोश के दिमाग में कौन-कौन सी बातें और रणनीतियाँ उभर रही होंगी ।

कहानी को लेकर बच्चों के साथ संवाद कई तरह के विकल्प पेश करता है । आप चाहें तो नाटकीय ढ़ग से दो आवाजों में बोलें, इशारों या मुद्राओं से भी काम लें । संवाद को सजीव बनाने के लिए आप हाथ की कठपुतलियों का प्रयोग भी कर सकते हैं । आप कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक चलकर दोनों चरित्रों की भूमिका खुद निभा सकते हैं । ये सभी संभावनाएँ रोचक हैं और वे हमें इस बात की चुनौती देती हैं कि हम एक ही कहानी को साल-दर-साल या एक ही साल में कई बार सुनाते हुए अपनी सामर्थ्य बढ़ाते चलें ।

कहानी सुनाना यदि किसी शिक्षक की दैनिक जिंदगी में शामिल है तो वह कभी उबाऊ नहीं हो सकती । पर कहानी को रोज़ की घटना बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम प्राइमरी स्कूल के पाठ्यक्रम की अपनी धारणाओं को गम्भीरतापूर्वक बदलें ।

★ अधिक विवरण के लिये नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित मेरी पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' देखें ।

दीवार के किनारे तक पहुँच गया। उसने जब नीचे झांका तो उसे एक क्रोधित शेर त्यौरी चढ़ा और बड़-बड़ करता हुआ मुँह दिखा जो उसे घूर रहा था। वह उस दुश्मन पर कूदा, थोड़ी देर छटपटाया और फिर डूब गया।

खरगोश फटाफट दूसरे जानवरों के पास वापिस पहुँचा और यह घोषणा कर दी कि उसने शेर को मार दिया है, अब उन सब के डरने के दिन खत्म हो गए हैं। फिर उसने सबको अपने कारनामे की कहानी सुनाई और बताया कि उसने यह सब कैसे किया । सभी जानवरों ने उसकी चतुराई की खूब प्रशंसा की।

उस दिन के बाद से जानवर अपनी समस्याएँ सुलझवाने और झगड़े दूर करने के लिए हमेशा खरगोश से गुजारिश करते और उसके पास सलाह लेने जाते। बस इसी तरह वह 'बुद्धिमान खरगोश' के नाम से जाना जाने लगा।

स्त्रोत: बर्मा और थाय की परियों की कहानियाँ, सोमैया, मुम्बई

कथावाचक की ओर से

इस अंक के लिए तैयारी के दौरान हमें तीन व्यावसायिक कथावाचकों – इन्दिरा मुखर्जी, गीता रामानुजम और पारो आनन्द, से बातचीत करने का मौका मिला। ये तीनों कहानियाँ सुनाती आ रही हैं और कहानियाँ सुनाने के संदर्भ में कई वर्षों से कार्यशालाएँ भी आयोजित करती रही हैं। इस भाग में उन्होंने कहानी सुनाने के कुछ अपने अनुभवों के बारे में बताया है। गीता रामानुजम ने बताया है कि कैसे उन्होंने कहानियों को पढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया। पारो आनन्द ने बच्चों के पढ़ना सीखने में कहानियों की भूमिका के बारे में चर्चा की है। इन्दिरा मुखर्जी हमारा ध्यान उन मानसिक प्रेतों (निराधार मान्यताओं) की ओर आकर्षित करती हैं जो हम अनजाने में कहानियों के माध्यम से फैला सकते हैं।

गीता रामानुजम

कहानी सुनाना मेरे लिए पढ़ाने का एक कुदरती तरीका है। वास्तव में व्यावसायिक कहानी सुनाने वाली बनने से पहले मैं एक अध्यापिका ही थी। मैं इतिहास और सामाजिक ज्ञान जैसे विषयों को पढ़ाने के लिए कहानियों का इस्तेमाल करती थी। उदाहरण के लिए सिन्धु घाटी सभ्यता पढ़ाने के लिए मैं टूटे हुए बर्तन या मोहर के कुछ टुकड़े या धातु से बनी कुछ चेन और चूड़ियाँ और लकड़ी जमीन में गाढ़ देती थी और बच्चों को उन्हें खोद कर ढूंढने को कहती। बच्चे खजाना खोजने निकल पड़ते और उन्हें खोद कर ले आते। इसके बाद मैं उन्हें मोहरों, उस क्षेत्र के लोगों के जीवन, मूल्यों, धर्म और संस्कृति से संबंधित कहानी सुनाती। कभी-कभी मैं एक ऐसी किताब से उद्धरण चुनती जिसमें दूसरी प्राचीन सभ्यताओं, जैसे- यूनान और मिश्र की कहानियाँ होती और इन सभ्यताओं की गाथाएँ और प्रचलित कहानियाँ पढ़ कर सुनाती। इस तरह शुरू हुआ विषयों को मजेदार बनाने के लिए कहानियों और अन्य रचनात्मक तरीकों की खोज का लम्बा सफर।

जब मैं पुस्तकालय की अध्यक्ष बनीं तब मैं और भी मजेदार चीजें कर पाई। सबसे पहले मैंने हर कक्षा के लिए पुस्तकालय में एक अतिरिक्त कालांश सम्भव बनाया। इस प्रकार हर कक्षा हफ्ते में दो या कभी-कभी तीन कालांश पुस्तकालय में बिताती। एक कालांश किताबें लेने के लिए होता, दूसरा कालांश संदर्भ कार्य करने के लिए और तीसरा कहानी सुनाने के लिए होता था। पुस्तकालय में मेरे पास कहानी सुनाने के लिए आरामदेह छोटी सी जगह थी जहाँ मैं बच्चों को कहानियाँ पढ़ कर सुनाती। बच्चे भागे-भागे पुस्तकालय आते और चुपचाप बैठकर इंतजार करते कि पिछले हफ्ते जहाँ मैंने कहानी छोड़ी थी, उससे आगे सुनाऊँ। मैंने पाया कि समय के साथ ये

बच्चे पुस्तकालय में ऐसे पाठक बन गए, जिन के लिए पढ़ना जरूरी सा हो गया- एक ऐसी आदत जिसकी जड़ें कहानी सुनाने वाले सत्रों की भागीदारी में थी।

घर से स्कूल तक के बस सफर में भी मुझे कहानी सुनाने में छिपी संभावनाओं का भरपूर उपयोग करने का मौका मिला। यह एक घंटे का सफर था और बच्चे मुझे कहानी सुनाने का आग्रह करते। मैं उन्हें मछलियों की, गिलहरियों की, ऐसी स्कूल-बसों की जो स्कूल पर न रूक कर आगे निकल जाती और किसी दूसरी ही जगह रूक जाती। बब्बलगम के रोमांचक हादसों की और कई दूसरी कहानियाँ तब तक सुनाती जब तक हम स्कूल के गेट तक नहीं पहुँच जाते। फ़िर मैं फटाफट कहानी खत्म कर देती थी। एक बच्चे से दूसरे बच्चे तक करके, सभी बच्चों में यह बात पहुँच जाती कि मैंने तितली की या बब्लगम की कहानी सुनाई। वे मुझे वही कहानी सुनाने को कहते। अगर कभी कहानी सुनाते समय मैं कोई बात भूल जाती तो बच्चे मुझे याद दिलाते कि मैंने कौनसी खास आवाज निकाली थी और वे एकदम टोक देते अगर मैं पात्रों के नाम गोपाल की जगह पाचक या दीपक की जगह राम कह देती। बच्चों को वही कहानियाँ, बिना कुछ बदलाव किए बार-बार सुनना बहुत अच्छा लगता था।

पारो आनन्द

मुझे लगता है कि किताब पढ़ने की तरफ बढ़ने के लिए कहानी सुनाना एक जरूरी कदम है। क्योंकि किताबों के अन्दर जाने वाला रास्ता बच्चों के लिए कठिन है और खतरनाक भी। यह एक अनजानी दुनिया में जाने के सफर के समान ही है। काले शब्द पन्नों पर ऐसे रेंगते लगते हैं जैसे कई दुश्मन कीड़े। बच्चे जब पढ़ना शुरू करते हैं तो वह बहुत सी अज्ञात चीजों से रूबरू होते हैं। वे ऐसे लोगों से मिलते हैं जिन्हें वे कभी नहीं मिले, ऐसी जगहों पर जाते हैं जिनके बारे में उन्होंने सुना तक नहीं

होगा। इस कार्य को कम घबरा देने वाला बनाने के लिए आप क्या कर सकते हैं? मेरे लिए इस प्रश्न का स्वाभाविक जवाब कहानी सुनाना है। मैं जानती हूँ कि बहुत से माँ-बाप और यहाँ तक के शिक्षकों के पास भी बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए समय निकालना बहुत कठिन होता है। परन्तु अब समय आ गया है कि सीखने की पूरी प्रक्रिया में और खासतौर पर पढ़ना सीखने में, कहानी सुनाने की अहम् भूमिका को शिक्षक और माता-पिता, सभी महसूस करें। एक बार बच्चे किसी किताब से कहानी सुनते हैं तो वे उस किताब को अपने हाथों में लेना चाहते हैं और स्वयं उसे पढ़ना चाहते हैं। जब वह पढ़ रहे हों तब उनके नन्हें कन्धों पर से झांकने पर आप पाएंगे कि वे सबसे पहले उस कहानी को खोजेंगे जो उन्होंने हाल ही में सुनी हो। इसमें कई तरह की अनुभूतियों से मिलकर बना अनुभव होता है, क्योंकि जब वे पढ़ रहे होते हैं तो वे साथ-साथ मन में उसे सुनते भी रहते हैं और उसी रोमांच का बार-बार अनुभव करते हैं। जब वे पूरी किताब पढ़ लें तो उनसे पूछिए कि उन्हें कौनसी कहानी सबसे ज्यादा अच्छी लगी? निश्चित रूप से उनका जवाब होगा- 'वह कहानी जो हमने सबसे आखिर में सुनी थी।'

राष्ट्रीय बाल साहित्य केन्द्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत ने कहानी सुनाने की संभावनाओं का भरपूर उपयोग करने के लिए बच्चों तक पहुँचने के कई तरीके खोजे हैं। इनमें हैं:- कहानी सुनाने के लिए कार्यशालाएँ, अध्यापकों और बच्चों के लिए मैराथन या किताबों की गाड़ी के साथ कहानी सुनाने वालों को गाँवों में भेजना। (विस्तार से जानने के लिए गतिविधि संग्रह देखिए)

इन्दिरा मुखर्जी

मैं सोचती हूँ कि कहानियाँ सुनाना और कहानियाँ सुनना बड़े होने का अनिवार्य हिस्सा है। कहानियाँ विस्मय की अनुभूति को बढ़ाती है, कल्पनाशक्ति को तेज करती है और संवेदना, सहानुभूति व आपसी समझ के विकास में मदद करती हैं। कहानियाँ हमारे झुकावों, पक्षपातों, मूल्यों और मान्यताओं को भी संप्रेषित करती हैं। कई सालों के अनुभव के दौरान मैंने महसूस किया है कि कुछ पक्षपातों का बार-बार कहानियों के माध्यम से उजागर होना अत्यन्त हानिकारक भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, ऐसी कई कहानियाँ है जिनमें रंग भेद काफी स्पष्ट होता है- मुख्य अभिनेता जो अच्छा होगा हमेशा गोरा होगा और खलनायक हमेशा खराब होता है और काला भी होता है।

कौवे को हमेशा विश्वासघाती गुणों के साथ बेहद चालाक पक्षी के रूप में दिखाया जाता है। इसी तरह कई लोक कथाओं में लिंग के प्रति दृढ़ पक्षपाती मान्यताएँ दिखती हैं। औरत को एक ऐसी दुष्ट शख्सियत के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो नायक को विनाश की ओर ले जाती है। परियों की ज्यादातर कहानियों में हमेशा राजकुमार, राजकुमारी को बचा रहा होता है। राजकुमारी को निहायत असहाय दिखाया जाता है। मैं अपनी कहानी सुनाने की कार्यशालाओं के कुछ अनुभव आपके साथ बांटना चाहती हूँ जिनमें मैंने लिंग पक्षपातों की सशक्त भावनाएँ देखीं।

एक कार्यशाला में प्रतिभागी अपने बचपन में सुनी कहानियों को याद करने की कोशिश कर रहे थे। एक प्रतिभागी, सुनिता ने अपने बचपन का एक किस्सा, जब वह छः साल की थी याद करके सुनाया। 'मैं वे रातें कभी नहीं भूल सकती। रोज रात को हम अपनी दादी माँ के चारों तरफ बैठ जाते और उनकी मजेदार कहानियाँ सुनते। वास्तव में हर रात वह हम में से किसी एक बच्चे को चुनती और उस बच्चे के बारे में एक कहानी बुनती। एक रात मेरे भाई की बारी थी। वह बहुत रोचक कहानी थी और मेरे भाई को एक शक्तिशाली राजकुमार के रूप में चित्रित किया गया था। वह जवान, सुन्दर और बहादुर था और वह सब मुश्किलों का सामना कर सकता था। अगली रात मेरी बारी थी। मैं अपनी दादी माँ के सामने ध्यान लगा कर बैठी थी। मैंने सोचा कि मुझे भी वैसे ही बहादुर राजकुमारी की तरह चित्रित किया जाएगा जैसे मेरे भाई को निडर और शक्तिशाली चित्रित किया था। परन्तु मुझे निराश होना पड़ा। मुझे उदास और असहाय राजकुमारी की तरह दिखाया गया सिर्फ जो एक बहादुर राजकुमार द्वारा बचाई जाने और उस बहादुर राजकुमार से शादी करने के लिए है।

कई लोक-कथाओं में लिंग के प्रति दृढ़ पक्षपात देखा जाता है। औरत को एक दुष्ट आत्मा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है जो नायक का सर्वनाश करती है। परियों की कुछ कहानियों में हमेशा राजकुमार ही राजकुमारी को बचा रहा होता है। राजकुमारी को निहायत असहाय दिखाया जाता हैं।

कहानी सुनाने के एक अन्य सत्र में एक छोटी सी सांवली लड़की ने कहानी सुनाने वाले को एक खास वाक्य दोहराने को कहा और जब भी वह वाक्य दोहराया जाता उसका चेहरा जगमगा उठता और आँखें चमक जाती। वह वाक्य जो इस लड़की के लिए इतना महत्व रखता था वह था- ''एक लड़की थी जो सांवली और सुन्दर थी।'' शायद तब तक उसने एक ही तरह का वाक्य सुना होगा, ''एक लड़की थी जो गोरी और सुन्दर थी।''

आपके साथ ये दो अनुभव बांट कर मैं आपको यह कहना चाहती हूँ कि अगर हमारे बच्चों को कुछ सीमित कहानियाँ ही सुनने को मिलेंगी तो उनमें कुछ पक्षपात विकसित हो सकते हैं जो उनके सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करेंगे और यहाँ तक की उनके संज्ञानात्मक विकास में भी बाधा बन सकते हैं।

इसलिए यह जरूरी है कि बच्चों को अनेकानेक तरह की कहानियों से परिचय करवाना चाहिए, कहानियाँ जिनमें विषय-वस्तु और रूप दोनों में विविधता हो।

छपते-छपते

आठवीं लिंग भेद समन्वयक बैठक में प्रसंग क्षेत्र था कहानी सुनाने के जरिए लिंग भेद के प्रति संवेदनशील बनाना। इसके आधार पर कुछ गतिविधियाँ आन्ध्रप्रदेश में शुरू की गई हैं।

- *गीता रामानुजम बंगलौर में २० वाली एक स्वतन्त्र पत्रकार हैं और एक कहानी सुनाने वाली भी हैं। वह कथालय नाम की एक संस्था चलाती हैं, जो कहानियाँ सुनाने के लिए कार्यशालाएँ, क्षेत्रीय भ्रमण और कई संबंधित गतिविधियाँ आयोजित करती है।*
- *पारो आनन्द आजकल एन.सी.एल. (राष्ट्रीय बाल साहित्य परिषद्) एन.बी.टी. में सम्पादिका हैं। इन्होंने बच्चों के लिए कई किताबें लिखी हैं और अलग-अलग राज्यों में कहानियाँ सुनाने के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की हैं।*
- *इन्दिरा मुखर्जी कहानियाँ सुनाती हैं। वे एक लेखिका हैं, जो आजकल ऐक्शन ऐड के प्रोजेक्ट 'कहानियों में लिंग पक्षपात' पर काम कर रही हैं। इन्होंने पारम्परिक लोक कथाओं को ढूंढने व समझने के लिए देश भर में भ्रमण किया है। इनकी कहानियाँ भी प्रकाशित हुई हैं।*

अध्यापिका की डायरी से

हम मध्य प्रदेश की एक अध्यापिका– गंगा गुप्ता की डायरी से दो उद्धरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इन उद्धरणों में उन्होंने कहानी सुनाते समय कक्षा–कक्ष में हुए अनुभवों के बारे में बताया है। वह एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (प्राशिका) से करीब से जुड़ी हैं। ये उद्धरण प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए एस.सी.ई.आर.टी. और एकलव्य द्वारा बनाए गए पैकेज सीखना–सिखाना में दिए गए हैं।

शब्दों की पहचान

21 सितम्बर 1988

सभी बच्चों को भाई बहनों के नाम लिखना सिखाया । बहुत उत्साह से बच्चे अपने भाई बहनों के नाम बताकर लिखने की कोशिश कर रहे थे । नाम लिख लेते तो बहुत खुश होते । बड़े मनोयोग से वे इस गतिविधि में जुटे थे । सबने पहले नकल की । तीन चार बार नकल करने के बाद बिना देखे नाम लिखकर बताया । मैं कहती लिखो 'स' में छोटे 'उ' की मात्रा 'सु', 'न' में छोटी 'इ' की मात्रा 'नि', 'त' में बड़े 'आ' की मात्रा 'ता', तो मंगलेश ने "सुनिता" लिखा । इसी प्रकार सभी बच्चों को अक्षर और मात्रा शायद समझ में आ रही थी ।

एक कहानी पढ़कर सुनाई, 'शोर मचा जंगल में' । प्रत्येक पन्ने पर जानवरों के जो नाम आते गए मै उन्हें बोर्ड पर लिखती जाती । दूसरा पन्ना पढ़ने से पहले बच्चों से बोर्ड पर लिखे नाम दोहराने को कहती कि..... किसने जंगल में खेलकूद कर शोर मचाया ? मैंने बोर्ड पर लिखे हाथी पर उंगली रखी तो बच्चों ने पहचान कर पढ़ा–हाथी ने ।

अब बहनजी हिरण ....

इसी प्रकार बार–बार दोहराने से बच्चे पहचान गए कि हाथी कहां लिखा है तो हिरण, बंदर आदि कहां ।

बच्चों को बार–बार बोर्ड पर लिखे शब्दों की ओर देखने के लिए कहा, "भैया देखते जाओ, अपने नाम लिखते जा रहे है कि कौन शोर मचा रहा है । बाद में इनको पकड़ कर पिटाई करेंगे ।"

"बहनजी खरगोश लिखो" – बच्चे मुझे बताते भी जाते – वो हल्ला मचा रहा था । .....कहानी समाप्त हुई ।

बच्चे बोले, "बहनजी अब इनको पीटो ।" मैंने कहा अच्छा चलो.... बच्चों की दो–दो की टोली बनाकर हाथी, हिरण, खरगोश और बंदर बनाए । एक बच्चा बना शेर । शेर ज़ोर से दहाड़ा – – – सभी हाथी, हिरण, खरगोश भागे । खूब भगदड़ मची कमरे में । बच्चो को काफी मज़ा आया । फिर सबसे पूछा, "तुम क्या बने थे तख्ता पर लिखा है, उंगली रखकर बताओ ।" जिस–जिस ने बता दिया वे छूट गए और जो नही बता पाए वे अलग हो गए । मैंने कहा "अब इनकी पिटाई होगी, यही शोर मचा रहे थे जंगल में ।" उन्हें गोल–गोल घुमाया । सभी बहुत खुश हुए । खूब मज़ा आया । बच्चों ने तख्ते पर लिखे शब्द काफी हद तक ध्यान में रखे ।

नोट : मैंने अनुभव किया कि दो दिन पहले जो शब्द कार्ड से दस बार लिखवाने के बाद भी बच्चे नहीं पहचान पाए थे, वे सब कहानी में शब्दों को बोर्ड पर लिखकर दोहराते जाने से आसानी से बताने लगे । बहुत देर बाद भी बीच में से पूछने पर कि बंदर कहाँ लिखा है ममता ने झट से बता दिया ।

एक नया अनुभव

1 अक्टूबर 1991

शनिवार को मैंने कहानी सुनाई थी । जिन बच्चों से पूछा उन्होंने पूरी कहानी बताई । बीच बीच में यदि वे भूलते तो अन्य बच्चे बताने लगते कि पहले "ये और हे बे ।"

मोहन ने कहा, "बहनजी मै चुनमुन चूहा की कहानी गोंडी में बताऊंगा ।" उसने गोंडी में कहानी शुरू की । सभी बच्चों को बहुत मज़ा आ रहा था । सब खूब हंस रहे थे । जब मोहन बीच में कुछ भूल जाता तो कक्षा दो की ममता उसे गोंडी में ही आगे की कहानी बताती । मुझे भी बहुत अच्छा लगा – जैसे

"चल मेरी ढोलक ढम्मक ढुम,
नानी के घर चलें हम और तुम" –
इसका गोंडी में अनुवाद है

"दा नवा डोलक उम्मक डुम, नानी
ना रोन चले इम्मा न नीवा ।"

नोट : इस प्रकार ये पुरानी कहानी आज बिल्कुल नई ही बन गई । मुझे नहीं पता था कि प्रत्येक बच्चा पूरी कहानी हिंदी से गोंडी में परिवर्तित करके क्रम से लगातार बता सकता था । यह मेरा पहला नया अनुभव था, पर काफी बढ़िया रहा ।

गंगा गुप्ता
संदर्भ अध्यापिका
प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (मध्यप्रदेश)

एक कथावाचक की खोजबीन

हम आपके लिए 31 मई, 98 को डेकन हेराल्ड में प्रकाशित लेख "एक कथावाचक की खोजबीन" से एक उद्धरण लेकर आए हैं। इस लेख में गीता रामानुजम हमें दिखाती हैं कि कैसे कहानियाँ पढ़ाने का एक प्राकृतिक साधन है। बच्चों के लिए सीखने के समृद्ध अनुभव पैदा करने में कहानियों का प्रयोग कैसे-कैसे किया जा सकता है, इस मुद्दे पर भी उन्होंने चर्चा की है।

बच्चों को एक कहानी सुनाइए और वे दत्तचित्त होकर सुनेंगे। बच्चों को कहानी के कुछ पात्रों, पक्षियों और फूलों को छूने को कहिए। उन्हें किसी पेड़ को देखने, महसूस करने, सूंघने दीजिए, उसका रस चखने दीजिए और उसके भागों का अध्ययन करने दीजिए। उन्हें यह समझने में सहायता कीजिए कि वह पेड़ किस प्रकार पौधों, जानवरों, पत्थरों, मिट्टी और पानी से बने जंगल का एक भाग है। उन्हें घटनाओं से संबंधित कहानियाँ सुनाइए जैसे- पृथ्वी का जन्म कैसे हुआ या चिपको आन्दोलन की कहानियाँ। उन्हें पारम्परिक कहानियाँ सुनाना भी शायद ठीक रहेगा। क्योंकि भारत में सम्पूर्ण सांस्कृतिक धरोहर है और राक्षसों और यमदूतों की कहानियाँ हैं। बच्चों को अभी भी इन विशालकाय जीवों की कल्पना करना बहुत अच्छा लगता है और उन्हें दानवों, भूतों और जानवरों की तरह चीखने-चिल्लाने में बहुत मजा आता है।

बच्चों को सीखने के कार्य के केन्द्र में रखें। सीखने के कार्य में गतिविधियाँ जोड़ें और बच्चों को पौधों की देख-रेख करना, उन्हें पानी देना सिखाएँ या उन्हें यह समझने में मदद करें कि किस प्रकार एक बीज अपने छोटे से खोल में एक पूरा 'पेड़' समाए रखता है। आप जैसे-जैसे कहानी की गहराई तक जाएँगे, हरेक कहानी सिखाने का एक प्राकृतिक साधन बन जाएगी और बच्चों में उत्सुकता पैदा करेगी। वे आसानी से स्वयं ही कला, पढ़ने-लिखने, विज्ञान और गणित से जुड़ जाएंगे। बच्चे अभी भी सच्चे होते हैं और वे ऐसी कहानियाँ पसन्द करते हैं जो उनकी भावनाओं, इन्द्रियों, विचारों और कार्यों को छूती हों।

कहानी का मजा समूह में लिया जा सकता है चाहे वह किसी कैम्प में हो, परिवार और मित्रों के बीच हो या अन्य कहीं। बच्चे कहानी सुनाने वाले को बहुत तन्मयता से सुनते हैं और यह जानकर बहुत खुश होते हैं कि उनके हाव-भाव और भावनाएं साथ कहानी सुन रहे दोस्तों से बहुत मिलती-जुलती हैं। कहानी सुनाने में आँखों का सीधा सम्पर्क होता है और बच्चे कहानी सुनाने वाले के स्नेह और उत्तेजना को महसूस कर सकते हैं। हाल ही में आयोजित कहानी सुनने-सुनाने की मेरी एक कार्यशाला में बच्चों ने कहानी के हर पल का पूरा-पूरा मजा लिया। वे जोकर की तरह नाचने लगे और तरह-तरह के चित्र बनाने लगे। 'ध्रुव', एक ऐसा बच्चा जो तारा बन गया, की कहानी सुनकर उन्होंने एक पारम्परिक कैलेण्डर बनाया। कल्पनाओं ने एक सुन्दर मोड़ ले लिया।

हरेक कहानी के बाद बातचीत कीजिए और उन्हें मदद कीजिए कि जो आपने कहा है वे उसके बारे में और जानकारी इकट्ठी करें: मान लीजिए आपने उन्हें गुरूजी और सांप की कहानी सुनाई है तो उन्हें कोबरा के स्वभाव के बारे में पता करने को कहिए और कहानी यदि हितोपदेश से है तो हितोपदेश किताब क्या है और इसमें किस-किस तरह की कहानियाँ हैं पता करने को कहिए। हितोपदेश पंचतन्त्र की तरह हमेशा बनी रहने वाली कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ शुरू में संस्कृत में लिखी गई थीं। छठी शताब्दी ए.डी. में ये फारसी में और 850 ए.डी. में अरबी में और फिर यहूदी और ग्रीक में अनुवादित की गई । हितोपदेश का संस्कृत से अंग्रेजी में अनुवाद श्री ऐडविन आरनोल्ड ने किया, यह बात रोचक है न? बड़ों और बच्चों, दोनों के लिए यह कहानियाँ सीखने की एक उम्दा प्रक्रिया हैं।

फिर, उन्हें आप अपने सामने कहानी सुनाने दीजिए और उनसे उसके बारे में प्रश्न पूछिए। संस्कृतियों को एक-दूसरे में

सम्मिलित करिए- प्राचीन भारतीय कहानियों को अमरीकी कहानियों, जापानी लोक-कथाओं और विश्व की दूसरी लोक-कथाओं से आपस में जोड़िए। विश्व की ज्यादातर संस्कृतियों में, जो कहानियाँ आज भी जीवित हैं उनका उद्गम बहुत पहले की समृद्ध मौखिक परम्पराओं में है। कहानियों में बार-बार कहा है कि धरती की सारी सजीव और निर्जीव वस्तुएँ एक ही हैं। अलग-अलग जगह की ऐसी कहानियों को पढ़कर जो लगभग एक जैसे विचारों को उभारती हैं, हम मानने लगते हैं कि हम सब लोग एक ही बड़े सम्पूर्ण का भाग हैं। कहानियाँ न सिर्फ हमें आत्मविश्वास और एक पहचान देती हैं, बल्कि हमें गांव के और आस-पास के लोगों को समझने और उन तक पहुँचने में हमारी मदद करती हैं।

कहानियाँ माध्यम हैं बच्चों की भीतरी दुनिया में गहराई तक जाने का, ऐसी जगहों तक जहाँ कल्पनाएं और सपने नित नए और व्यापक होते दुनिया के नजरिए को गढ़ती हैं। ये हमारी कल्पनाओं और आस-पास के यथार्थ के बीच एक जुड़ाव भी हैं जो हमें विभिन्न प्रश्नों का उत्तर देने में मदद करती हैं- जैसे मैं कौन हूँ? या मैं कहाँ जा रही हूँ?

हम यह कैसे पता करें कि कहानी सुनते समय बच्चे के दिमाग में क्या चल रहा है?

कहानी का बच्चे के लिए क्या अर्थ होता है? छोटे बच्चों को कहानी सुनाते समय करीब से देखना इस बात पर रोशनी डालता है। मेरा एक दोस्त अपने बेटे के साथ हुए अनुभव बताता है। यह बच्चा सोते समय कहानियाँ सुनता था। इसके अलावा जब भी वह परेशान होता वह कहानी सुनाने को कहता। कहानी किसी तरह उसको उस समय की चिन्ता से दूर ले जाती। कुछ दिन वह बच्चा एक ही कहानी कई बार सुनने की जिद करता रहा और फिर उसने कहानी के बीच में टोकना शुरू कर दिया। वह कहानी की कुछ बातें बदलना चाहता था और कुछ नई विशेषताएं उसमें डालना चाहता था। फिर वह यह भी जानने की कोशिश करता कि कोई पात्र एक खास ढंग से व्यवहार क्यों करता है? मेरा दोस्त जो कहानियाँ उस बच्चे को सुनाता वह अपनी पहले पढ़ी हुई कहानियों के कुछ परिवर्तनों के साथ मिश्रण होती थीं। मेरा दोस्त कहानी सुनाते समय कुछ खास पहलुओं जैसे कि अंधेरा, खूंखार, अन्य पहलुओं की तुलना में बढ़ा-चढ़ाकर बताता था। कहानियाँ बिना किसी स्पष्ट नैतिक मूल्यों के सुनाई जातीं। एक कहानी में एक हाथी जमीन पर भागते और नाचते हुए जमीन के नीचे रहने वाले कई छोटे चूहों के घर तोड़ देता है। चूहे हाथी से प्रार्थना करते हैं परन्तु कोई फायदा नहीं होता। परन्तु फिर एक छोटे से चूहे को चींटी को बुलाने का विचार आया, जिसने हाथी के साथ बहुत बहस की और जब हाथी ने किसी प्रकार का कोई तर्क नहीं सुना तो चींटी हाथी की सूंड में घुस गई और उसे काट लिया। हाथी चूहों से माफी मांगता है और यह गलती कभी न दोहराने की कसम खाता है।

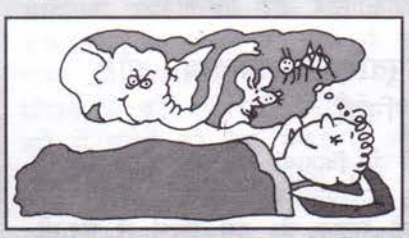

मेरे दोस्त ने उसे हाथी के बारे में एक और कहानी सुनाई। इस हाथी को अपना रंग पसन्द नहीं था। परन्तु वैसे वह बहुत अच्छा और मित्रवत् था। उसने एक नये रंग का होने के लिए सभी जानवरों को अपने आस-पास बुलाया। नये रंग का बनने के बाद हाथी को और ज्यादा दु:ख हुआ। अब उसे कोई नहीं पहचान पाता था, यहाँ तक कि वह बच्चे भी जो उस पर सवारी करते थे वे भी उसे खोजते फिरते थे। अंत में हाथी ने अपने नए रंग से पीछा छुड़ाया और फिर पहले जैसा हो गया। अब सब बच्चे उस पर सवारी करने आए।

मेरे दोस्त ने बताया कि पहले वह बच्चा हाथी और चींटी की कहानी रोज रात को सुनना चाहता था, परन्तु जब उसने दूसरी कहानी सुनी तो स्थिति बदल गई। यह कहानी सुनने के बाद, उस बच्चे ने मेरे मित्र को चींटी और हाथी की कहानी दोबारा सुनाने को कहा। वह इसमें कुछ बदलाव करना चाहता था। उसने कहा- "हाथी अच्छा होता है। वह घर नहीं तोड़ता। वह चूहों की बात सुनता है।"

-हृदयकान्त दीवान

गतिविधि संग्रह

इस बार गतिविधि संग्रह में हम आपके लिए कहानियों और किताबों से बच्चों के करीब तक पहुँचने के कुछ मजेदार तरीके लाए हैं। हम यह भी देखेंगे कि कक्षा-कक्ष में बच्चों के लिए सीखने के अनुभव बनाने में कैसे कहानियों का उपयोग किया जा सकता है। ये गतिविधियाँ पारो आनन्द और स्मिता के वास्तविक अनुभवों पर आधारित हैं। इसमें से कुछ गतिविधियाँ कृष्ण कुमार और अरविन्द गुप्ता की किताबों से लिए गए उद्धरण हैं।

ग्रीस में नीले बस्ते

विद्यालय में बच्चों को नियमित रूप से कहानियाँ सुनाई जा सकती है। वास्तव में कहानियाँ सुनाने के जरिए उन्हें कई तरह की किताबों से परिचित करवाया जा सकता है। आइए देखें कि ग्रीस में नीले बस्तों के साथ क्या किया गया है?

पुस्तकालयाध्यक्ष जो कहानी सुनाने वालों की भी भूमिका निभाती हैं, नीले बस्तों में एक खास विषय (थीम) की 150 किताबें उठा कर ले जाती हैं। गांव वालों को पहले से पता होता है कि नीला बस्ता कब आएगा? बच्चे पहले ही उत्सुकता से इकट्ठे हो जाते हैं। कहानी सुनाने वाली उसी विषयक पर कहानी सुनाना शुरू कर देती है, जिस विषयक से सम्बन्धित किताबें उसके पास होती हैं। कहानी जैसे-जैसे बढ़ती है, वह एक बार में एक किताब निकालती है। जब तक कहानी खत्म होती है, सारी 150 किताबें बस्ते के बाहर होती हैं। अगर कहानी जानवरों के बारे में है तो वह कहेंगी- "फिर शेर गुर्राया....." और शेर के बारे में एक किताब बाहर आ जाएगी। कहानी खत्म होने के बाद वह बच्चों को तब तक किताबें घर ले जाने के लिए जारी (इशू) करती जाती हैं जब तक कि बस्ता खाली न हो जाए। साथ ही साथ, 15 दिन पहले पिछले बस्ते में से दी गई किताबें वापस इकट्ठा की जाती हैं। ये किताबें किसी नई जगह दूसरे बच्चों के लिए चली जाती हैं।

क्या आप सोचते हैं कि हमारे संकुल संदर्भ केन्द्रों (सी.आर.सी.) के समन्वयक अपने स्कूल भ्रमण के दौरान बच्चों के लिए किताबें लेकर जा सकते हैं और नीले बस्ते प्रोजेक्ट की तरह का एक कार्यक्रम शुरू कर सकते हैं?

कठपुतलियाँ, किताबें और कहानियाँ

बच्चों में किताबों के प्रति रूचि पैदा करने का एक बहुत अच्छा तरीका कहानी सुनाना है। इस संदर्भ में एन.सी.सी.एल. अपना एक अनुभव हमारे साथ बांट रहा है।

एक गैर सरकारी संस्था- एन.सी.सी.एल. ने लोक जुम्बिश परिषद् के साथ मिलकर राजस्थान के 600 से भी अधिक गांवों में एक गहन प्रयोजना कार्यान्वित की है। इसके तहत अन्य गतिविधियों के अलावा किताबों की एक गाड़ी प्रतिदिन दो गांवों में न सिर्फ किताबें बल्कि कहानी सुनाने वालों को भी लेकर जाती है। वास्तविक साईज से बड़ी कठपुतलियाँ गाड़ी की खिड़कियों के बाहर झांक रही दिखती हैं। जैसे ही गाड़ी गांव से गुजरती है वे चिल्लाकर सभी का अभिवादन करते हैं, बच्चे उसका पीछा करते हैं और खुशी व मस्ती से शोर मचाते हैं। एन.सी.सी.एल कहानी सुनाने वाली बैठकों में भाग लेने के लिए ऊपरी सीमा 250 तय की हुई है। कई बार इन बैठकों में सारा गांव मौजूद होता था, यहाँ तक कि पीतल के बाजे वाले बैण्ड भी उपस्थित होते थे। कहानी सुनाने वालों को फूल-मालाएँ पहनाई जाती थीं- खास मेहमान! हजारों लोगों को संबोधित करना कोई आसान काम नहीं है। परन्तु क्या कभी अभिनेता बहुत सारे और उत्साहित श्रोताओं को देखकर अप्रसन्न हो सकता है? कहानी सुनाने वाले दोहरा काम करते हैं, एक तो कहानियों के माध्यम से बच्चों में किताबों के लिए रूचि पैदा करना और दूसरा उपलब्ध किताबों में से उनके लिए एक पसंदीता खास किताब छांटने में उनकी मदद करना। एक पुल बन चुका है। ऐसे ही प्रयास दूसरे गांवों और राज्यों में भी सफल रहे हैं।

मैराथन

कहानी सुनाने के लिए गाँव, संकुल और ब्लॉक स्तर पर मैराथन आयोजित की जा सकती है। जो भी अच्छे कहानी सुनाने वाले हैं, जैसे नानी-दादी, अध्यापक और अभिभावक, उन्हें एक या दो दिन के लिए संकुल संदर्भ केन्द्र या ब्लॉक संदर्भ केन्द्र पर बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। 15-20 बच्चों का एक समूह हरे एक कहानी सुनाने वाले के साथ बैठ सकता है। एन.बी.टी. (नेशनल बुक ट्रस्ट) ने हाल ही में लगातार 8 घंटों तक कहानी सुनाने का एक मैराथन आयोजित किया था। देश के और बाहर के कहानी सुनाने वाले अलग-अलग स्कूल के बच्चों को कहानियाँ सुनाने आए।

कहानियाँ बनाना

अध्यापक बोतलों के ढक्कन, कपड़े और चूड़ियों के टुकड़े, छोटे पत्थर, पत्तियाँ, पेन के सिक्के आदि इकट्ठे कर सकते हैं। बच्चों को 5 या 6 के समूह में बांटा जा सकता है और उन्हें ये सभी चीजें दी जा सकती हैं। हर एक समूह को कहा जा सकता है कि

★ *स्मिता आजकल डी.पी.ई.पी. के तकनीकी अनुसमर्थन समूह की शिक्षा-शास्त्र सुधार इकाई में मुख्य परामर्शद् हैं।*

वे इन चीजों के बारे में आपस में चर्चा करें और 15-20 मिनट में एक कहानी बनाएं। फिर प्रत्येक समूह में से एक बच्चे को कहानी प्रस्तुत करने को कह सकते हैं। दूसरे बच्चे अगर चाहें तो इसमें जोड़ सकते हैं।

कहानियाँ बनाने के दूसरे रोचक तरीकों को भी इस्तेमाल करके देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए बच्चे समूहों में बैठकर अध्यापक द्वारा बांटे गए चित्रों पर कहानी बना सकते हैं या फिर अध्यापक चित्रों वाली कहानी की किताबों का इस्तेमाल कर सकते हैं। किताब में लिखी हुई सामग्री छुपाई जा सकती है और बच्चों को चित्रों को देख कर कहानी बनाने को कह सकते हैं। बाद में उनको अपनी कहानी की तुलना किताब में दी गई कहानी से करने को प्रेरित किया जा सकता है।

कहानी बनाने की गतिविधि पूरी कक्षा के साथ इकट्ठे भी की जा सकती है। सारे बच्चे एक घेरे में बैठ सकते हैं। कोई भी बच्चा कहानी की शुरूआत एक वाक्य बोलकर कर सकता है। अगले बच्चे को पिछले बच्चे द्वारा बोले गए वाक्य के साथ जोड़कर एक वाक्य बोलना होगा। इस तरह कहानी आगे बढ़ती जाती है। चौथी और पाँचवी कक्षा के बच्चों के लिए यह कार्य थोड़ा और चुनौतीपूर्ण बनाया जा सकता है। उनको कहा जा सकता है कि कहानी की कोई एक निश्चित शुरूआत हो, अन्त तक (चरम तक) जाने वाली जिज्ञासा रहे, एक स्पष्ट अन्त हो और कहानी तभी खत्म होनी चाहिए जब एक पारी खत्म हो जाए (यानि कि जब हर बच्चे को अपना वाक्य जोड़ने का मौका मिल चुका हो)। पहला बच्चा कहानी शुरू कर सकता है, बीच वाले बच्चे उसे चरमोत्कर्ष तक ले जाना शुरू कर सकते हैं और आखिरी बच्चे को इसे समाप्त करना होगा।

क्या आपको ऐसा नहीं लगता कि बच्चों को उनके खुद के द्वारा या अध्यापक के द्वारा सुनाई गई कहानियों का अभिनय करने को कहना एक अच्छा विचार होगा?

कहानी संग्रह

(कृष्ण कुमार की किताब 'बच्चे की भाषा और अध्यापक' से)

बहुत से अध्यापकों को यह नहीं मालूम होता कि सुनाने के लिए अच्छी कहानी कहाँ ढूंढें। वे कभी-कभी पत्रिकाओं और अखबारों में आए कहानीनुमा लेखों को जोर से पढ़कर खुद को और बच्चों को तसल्ली दे देते हैं।

एक अध्यापक के लिए पचास या साठ कहानियों का एक निजी संग्रह या 'बैंक' बनाना और उन्हें याद करना कोई मुश्किल काम नहीं है। ऐसे बैंक के लिए कहानियाँ निम्नलिखित स्त्रोतों से मिल सकती हैं-

- पंचतन्त्र, कथासरितसागर, महाभारत, विक्रमादित्य की कहानियाँ, पौराणिक कथाएँ आदि।
- भारत और दुनिया के अलग-अलग भागों से लोक कथाओं का संग्रह।
- आपके अपने क्षेत्र की लोक कथाएँ, आप इन्हें समुदाय के बड़े-बूढ़ों की मदद से इकट्ठी कर सकते हैं।
- ऐतिहासिक कहानियाँ।
- पुराने क्षेत्रीय किस्से जो कहानियों की तरह सुनाए जा सकते हैं।

आगे क्या?

अध्यापक कहानी की कुछ किताबें कक्षा-कक्ष के सीखने के कोने में रख सकते हैं। कहानियाँ सुनाते समय वे सीखने के कोने में रखी किताबों के बारे में बच्चों को बता सकते हैं और इस तरह उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। चीजों को और अधिक रूचिकर बनाने के लिए वह कभी-कभी कहानी को एक अहम् बिन्दु पर छोड़कर बच्चों से कह सकता है कि सीखने के कोने में रखी किसी एक किताब में कहानी का बाकी हिस्सा है, उसे खोज कर लाओ।

प्रात:कालीन सभा में कहानियाँ

ज्यादातर विद्यालयों में सुबह सभा होती है। यह वास्तव में कहानी सुनने-सुनाने और कहानी पढ़ने को बढ़ावा देने के लिए एक बढ़िया मंच साबित हो सकती है। राजस्थान में कुछ विद्यालयों में प्रतिदिन एक बच्चे द्वारा एक कहानी सुनाई जाने की प्रक्रिया शुरू की गई। इसने न सिर्फ

बच्चों को अधिक से अधिक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया बल्कि उनके अन्दर बहुत से श्रोताओं के सामने बोलने का विश्वास पैदा करने में मदद भी (...और जाहिर है कि बच्चों को तो इसमें बहुत मजा आया ही)

हजार कहानियों का सेल

बच्चों को अधिक से अधिक किताबें पढ़ने को प्रेरित करने के अलग-अलग तरीके अपनाए जा सकते हैं। महाराष्ट्र में एक स्कूल में यह घोषणा की गई कि एक प्रतियोगिता हो रही है, देखा जाएगा कि कौन बच्चा सबसे पहले 1000 किताबें पढ़ लेता है। स्कूल में एक बड़ा और रंगीन बक्सा रखा गया। हरेक बच्चे को एक किताब पढ़ने के बाद उसका सारांश लिखकर अपने नाम और कक्षा के साथ उसे बक्से में डालना होता था। इस प्रक्रिया का बच्चों पर एक अद्भुत प्रभाव हुआ। बच्चे हर समय कहानियाँ पढ़ते और एक दूसरे को सुनाते, पात्रों के बारे में बातचीत करते दिखाई देते, यहाँ तक कि भोजनावकाश में भी उन्हें यही कुछ करते देखा जा सकता था!

नए मजेदार अनुभव

एक कहानी अपने आप में ही बच्चे को उत्तेजित करने के लिए काफी है परन्तु कहानियों में कुछ मजेदार परिवर्तन करके नये रूपों का भी प्रयास किया जा सकता है। कहानियाँ सुनाने के लिए कठपुतलियों, नाटकों, मिट्टी के मॉडल आदि के इस्तेमाल से बच्चों को नए और अलग-अलग तरह के अनुभव प्रदान करने में मदद मिलती है। कभी-कभी एक मामूली तार भी करतब दिखा सकता है। अगले पृष्ठ पर हम अरविन्द गुप्ता की किताब- ''टेन लिट्टल फिंगर्स'' से एक ऐसा ही उदाहरण देखेंगे।

गतिविधि संग्रह

डोरी कहे कहानी

यह मशहूर कहानी दुनिया भर में सुनाई जाती है । इसका भारतीय संस्करण इस प्रकार है – एक किसान पहले अपने खेत को जोतता है, फिर फसल को पानी देता है और उसके बाद खाद डालता है । अंत में फसल पक कर कटाई के लिए तैयार हो जाती है । तभी एक मोटा चूहा आता है और सारी फसल को खा जाता है ।

1 एक दो मीटर लम्बी डोरी लें (सुतली अच्छा काम करेगी)। उसके दोनों सिरों को गाँठ बाँध कर एक छल्ला बनाए।

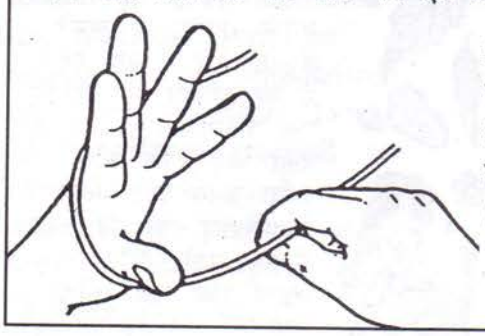

2 डोरे के छल्ले को चित्र में दिखाए अनुसार अपनें बायें हाथ पर रखें (*किसान खेत चुनता है*)।

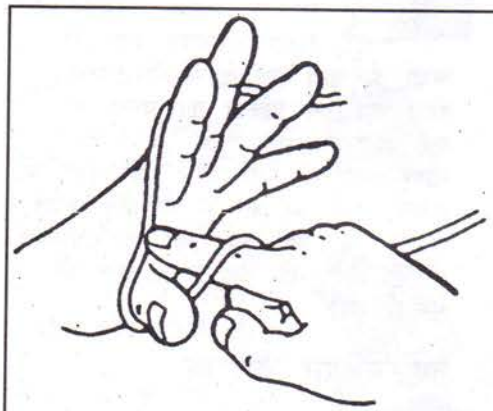

3 दायें हाथ की तर्जनी उगंली को आगे वाले डोरे के नीचे से डालें और उंगली का हुक बनाकर पीछे वाले डोरे को सामने खींच लें ।

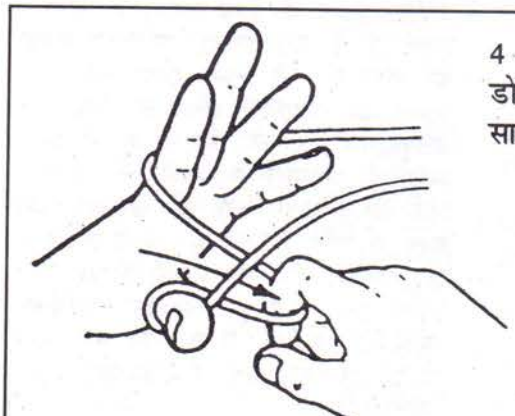

4 हुक को पहले डोरे के थोड़ा सा सामने लायें ।

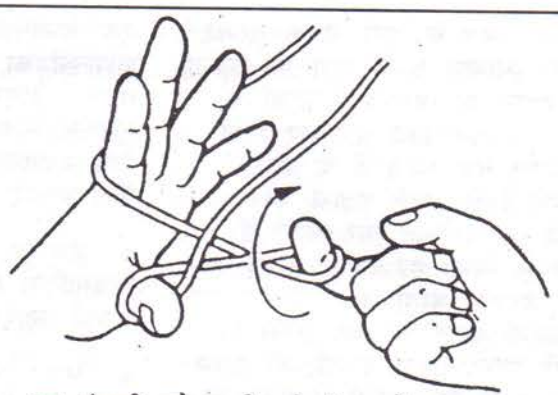

5 अब उंगली को घड़ी की दिशा में आधा चक्कर घुमाए । इससे उंगली पर डोरे का छोटा छल्ला बन जायेगा ।

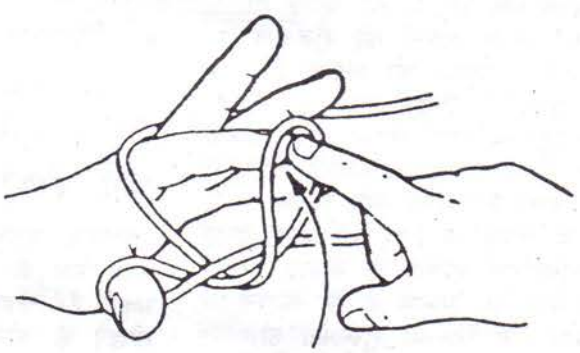

6 इस छोटे छल्ले को बांए हाथ की तर्जनी उंगली पर चढ़ा दें (*किसान खेत की जुताई करता है*) ।

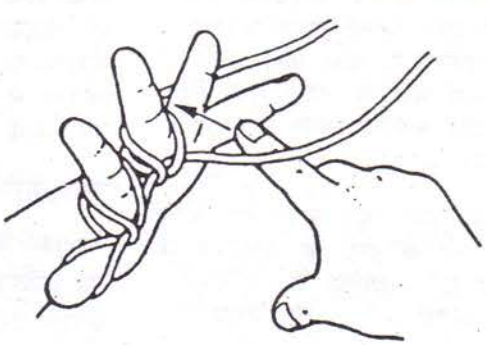

7 दायें हाथ की तर्जनी उगंली के हुक से बांए हाथ की तर्जनी और बीच की उंगली के पीछे वाली डोर को खीचें ।

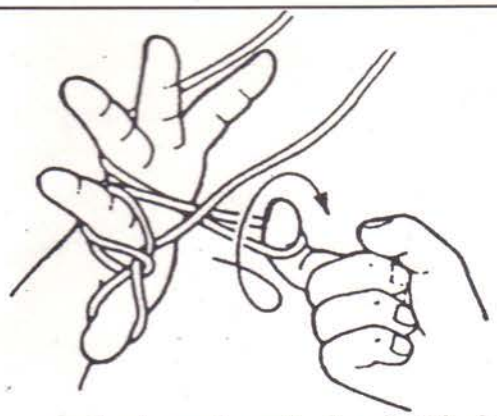

7 छल्लें को सामने वाली डोर के नीचे से निकालें । उसे फिर घड़ी की दिशा में आधा चक्कर घुमांए और छल्लें को बांए हाथ की बीच वाली उंगली में डाल दें *(किसान बीज बोता है)* ।

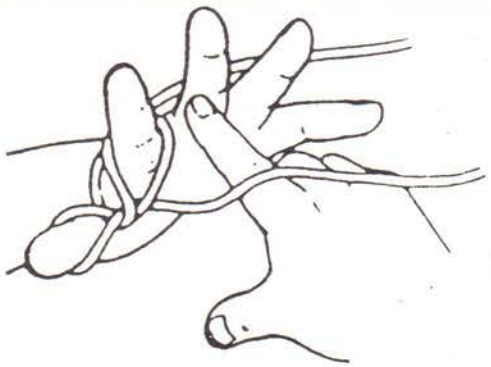

8 दुबारा फिर हुक से डोर को खीचें और उसे भी आधा घुमा कर तीसरी उंगली में भी डाल दें *(किसान फसल को पानी देता है)* । इसी तरह एक आखिरी छल्ला छोटी उंगली में भी डालें *(किसान खाद डालता है)* ।

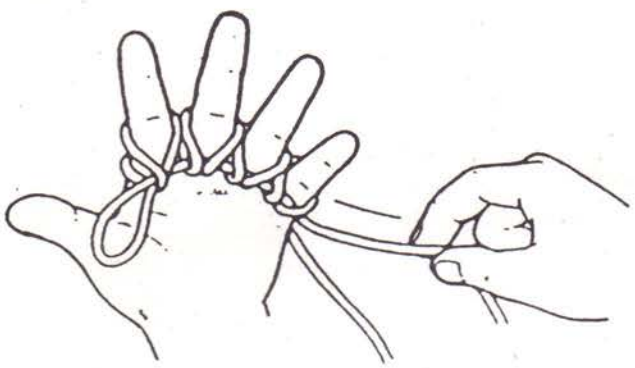

10 अंत में डोर कुछ ऐसी दिखेगी *(अब फसल पक कर कटने को तैयार है)* । अब दांए अगूंठे के छल्ले को छोड़ दें *(एक मोटा सा चूहा आता है, यह छल्ला ही चूहा है)* ।

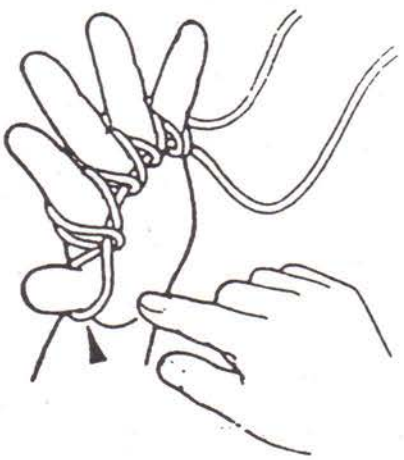

10 अब आगे वाली डोर को बांए हाथ से दूर खीचें ।

12 उंगलियों में फँसे छल्ले अब अपने आप खुल जाएगे *(यानि चूहा सारी फसल को खा गया है)* । यही कहानी का अंत है ।

संस्थाएँ जो विशेष हैं

कथा

मूल सिद्धांत

कथा एक मुनाफा नहीं कमाने वाली संस्था है जो बड़ों, बच्चों और नव-साक्षरों में पढ़ने के शौक को फैलाने का प्रयत्न कर रही है। इसके लक्ष्य हैं:-

- पढ़ने के मजे को बढ़ावा देना।
- जीवन भर सीखने की रूचि व शौक को बढ़ावा देना जो बच्चे को एक आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, जिम्मेदार और उत्तरदायी वयस्क बनने में मदद करे।
- लिंग संबंधी, सांस्कृतिक और सामाजिक दकियानूसी मान्यताओं को हटाने में मदद करना।
- उत्तमता को प्रोत्साहन देना और उच्चकोटि के साहित्य और अंग्रेजी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं में पारस्परिक अनुवादित सामग्री को सराहना।
- लिखी हुई और बिना लिखी (मौखिक) कहानियों के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के बीच कड़ियां जोड़ना।

कथा ने 1988 में काम करना शुरू किया, 1989 में इसका पंजीकरण एक समिति के रूप में हुआ। कामकाजी बच्चों के लिए स्कूल चलाने से लेकर महिला विकास के लिए गतिविधियाँ आयोजित करने तक के व्यापक क्षेत्र में यह संस्था कार्य करती है। इसके दो मुख्य प्रोजेक्ट हैं:-

(1) कल्पवृक्षम्

स्थायी अधिगम के लिए दिल्ली की गोविन्दपुरी झुग्गी झोपड़ी में रहने वाले 1300 कामकाजी बच्चों और उनके भाई-बहनों के लिए यह संस्था एक स्कूल चलाती है। ऐसे बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाते हैं जो कभी भी स्कूल नहीं गए या जिन्होंने कई साल पहले पढ़ना छोड़ दिया था और इस प्रकार फिर से निरक्षर हो गए हैं। दस साल से अधिक उम्र के हर बच्चे को कम्प्यूटर का प्रारम्भिक ज्ञान देना भी शुरू किया गया है। इसके अलावा यह केन्द्र अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र (एन.एफ.ई.), महिलाओं की साक्षरता व उनके सबलीकरण के लिए कार्यक्रम आदि भी चलाता है। इस संस्था द्वारा निकाले गए दो प्रकाशन हैं- **'तमाशा'** 8 से 12 साल की उम्र के बच्चों के लिए स्वास्थ्य और पर्यावरण के बारे में मजेदार खेल-किताब एवं **'धम्मक धुम':** 4 से 7 साल की उम्र के बच्चों के लिए एक खेल-किताब।

(2) कथा विलासम्

कहानियों के लिए अनुसंधान और संदर्भ केन्द्र एक विकेन्द्रित इकाई के रूप में काम करता है। आगे यह केन्द्र अनुसंधान, संदर्भ स्थल और प्रकाशन जैसे अन्योन्याश्रित इकाईयों के रूप में काम करता है, जो भारत जैसे बहु-भाषीय और बहु-सांस्कृतिक देश में उपलब्ध साधनों का अधिक से अधिक उपयोग कर पाती हैं। यह केन्द्र अलग-अलग भाषाओं में कहानियों की किताबें निकालता है।

काँची और शिष्या उपक्रम: कथा विलासम् और कल्पवृक्षम् के बीच एक पुल हैं। भारतीय साहित्य की अनुदित रूप में पहुँच औपचारिक और अनौपचारिक कक्षा-कक्ष तक ले जाते हैं चाहे वह प्राथमिक स्तर का हो चाहे अन्य किसी स्तर का। इसके लिए वह साहित्य का अनुवाद करते हैं और शिक्षकों व बच्चों के बीच ऐसा संवाद शुरू करवाते हैं।

आगे जानकारी के लिए इनसे सम्पर्क करें-
गीता धर्मराजन
ए-3, सर्वोदय एन्कलेव,
नई दिल्ली-17